नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानदंडों पर आधारित हिंदी पाठ्यपुस्तक

सरस्वती सरगम

हिंदी पाठमाला

4

लेखिकाएँ

गीता बुद्धिराजा
एम०ए०, बी०एड्०

डॉ० जयश्री अय्यंगार
एम०ए०, एम०फिल० (हिंदी)
(एन०सी०ई०आर०टी०, डी०एस०ई०आर०टी० द्वारा पुरस्कृत)

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:

- Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
- Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
- Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
- Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
- Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
- Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2020

ISBN: 978-93-53621-53-7

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.

All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2SRG040HINAB19CBY

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

आमुख

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी तथा व्यावहारिक जीवन से जोड़ना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से स्कूल और घर की दूरी कम करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने तथा रटा देने की प्रवृत्ति का प्रबल विरोध किया गया है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में चर्चित **बाल-केंद्रित शिक्षा** की दिशा में सफलता प्रदान करवाएगा।

इस उद्देश्य में तभी सफलता मिलेगी, जब सभी स्कूलों के प्राचार्य/प्राचार्या और अध्यापक/अध्यापिकाएँ बच्चों को **कल्पनाशील गतिविधियों, रचनात्मक प्रश्नों, पाठ से संबंधित प्रश्नों** की मदद से सीखने और अपने अनुभवों पर विचार प्रकट करने का अवसर देंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि बच्चों को **उचित अवसर, समय और स्वतंत्रता** दी जाए तो वे अपने **ज्ञान, सूझ-बूझ तथा कल्पना से ऊँची उड़ान** भर सकते हैं। बच्चों के सामने यदि ज्ञान की सारी सामग्री परोस दी जाए तो वे अपनी क्षमता के अनुसार उसमें से बहुत अधिक ज्ञानवर्धक चीज़ें निकाल लेते हैं। यदि बच्चों को उपदेश दिया जाए तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। जब वे **कहानी तथा कविता** पढ़ते हैं या सुनते हैं, तो **नैतिक तथा मानवीय-मूल्य** सहजता से स्वीकार कर लेते हैं।

- पुस्तक को तैयार करते समय पाठों का चुनाव बच्चों की **बौद्धिक क्षमता तथा भाषा-स्तर** को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
- पाठ के आरंभ में **पाठ को स्पष्ट करने वाली भूमिका** दी गई है।
- पाठों में दिए गए **चित्र तथा अभ्यास** बच्चों को आकर्षित करेंगे तथा वे कुछ-न-कुछ **संदेश** भी अवश्य ग्रहण करेंगे।
- **सोचिए और बताइए** यह प्रश्न बच्चों के सोचने, समझने और लिखने की क्षमता को बढ़ावा देता है।
- अभ्यास बनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चे स्वयं सोचें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को प्रकट कर सकें।
- बच्चे जब अपने विचारों को प्रकट करेंगे तो उन्हें **नए-नए शब्दों की जानकारी** होगी तथा उनका **शब्द-भंडार** भी बढ़ेगा।
- बच्चे और खेल दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए पुस्तक के बीच-बीच में बच्चों को आकर्षित करने के लिए **खेल तथा खेल से संबंधित गतिविधियाँ** भी दी गई हैं।
- हमारी संस्कृति, कलाओं तथा लोक-कलाओं से भरपूर है। बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए पुस्तक में उन्हें यथा स्थान दिया गया है।
- पुस्तक का निर्माण **सी०बी०एस०ई०** समेत विभिन्न राज्यों के शिक्षा बोर्ड्स के पाठ्यक्रम को ध्यान रखते हुए किया गया है।
- पाठ्यक्रम को तैयार करते समय **अहिंदी भाषी क्षेत्रों** के छात्रों का विशेष ध्यान रखा गया है।

शिक्षाविदों एवं अभिभावकों के ऐसे सुझावों का हम स्वागत करेंगे, जिससे पुस्तक के आवश्यक संशोधन में सहायता ली जा सके।

–लेखिकाएँ

विषय-सूची

- हमें पहचानो (आओ चलें दक्षिण की ओर) 6

1. नया साल 7
2. बगुला भगत 12
3. काम सब अच्छे हैं 19
   - मेरा पन्ना (गतिविधि–1) 24
   - हमारे प्रेरणा स्रोत (संत कवि वेमन रेड्डी) 25
4. अब बतलाओ 26
5. स्वच्छता का पाठ 32
   - मेरा पन्ना (गतिविधि–2) 41
6. मदर टेरेसा 42
   - मेरा पन्ना (गतिविधि–3) 48
   - संतवाणी (अतिरिक्त पठन) 49
7. काली कोयल, काली क्यों? 50
8. गांधी जी की हिंसा 58
   - मेरा पन्ना (गतिविधि–4) 64
   - अच्छे बच्चे (अतिरिक्त पठन) 65
9. चतुराई और विनम्रता 66
   - मीरा के पद 73

10. नववर्ष का पर्व–पोंगल 74
- मेरा पन्ना (गतिविधि–5) 79

11. आसमान में कितने तारे? 80

12. पिता का पत्र पुत्री के नाम 85
- अनमोल तसवीरें 90
- ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता (डॉ० निर्मल वर्मा) 91

13. जीव-दया 92
- मेरा पन्ना (गतिविधि–6) 98

14. रेलगाड़ी की कहानी 99
- मेरी नानी (अतिरिक्त पठन) 107
- बूझो तो जानें 108
- ये भी जानिए 109
- परियोजना पन्ना–1 111
- परियोजना पन्ना–2 112
- परियोजना पन्ना–3 113
- परियोजना पन्ना–4 114
- परियोजना पन्ना–5 115
- सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) 116

हमें पहचानो

आओ चलें दक्षिण की ओर...

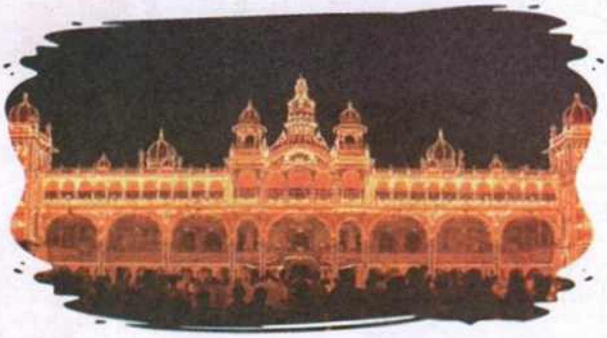

मैसूर पैलेस (मैसूर–कर्नाटक)

ग्लास हाउस (बंगलूरू–कर्नाटक)

नागार्जुन सागर बाँध
(नालगोंडा–आंध्र प्रदेश)

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर
(तिरुवनंतपुरम–केरल)

महाबलीपुरम (कांचीपुरम–तमिलनाडु)

विवेकानंद स्मारक
(कन्याकुमारी–तमिलनाडु)

अध्यापन-संकेत–ये दक्षिण के प्रसिद्ध स्थल हैं। इन्हें पहचानने में छात्रों की मदद करें।

1 नया साल

चिंतन-मनन

समय सदा एक-सा नहीं रहता वह परिवर्तनशील है। जीवन-मूल्य शाश्वत हैं। मनुष्यता के प्रति सच्चा तथा मनुष्यता को श्रेष्ठ मानने वाला ही सज्जन है। बच्चो अच्छे गुण अपनाकर अपने व्यक्तित्व को निखारिए।

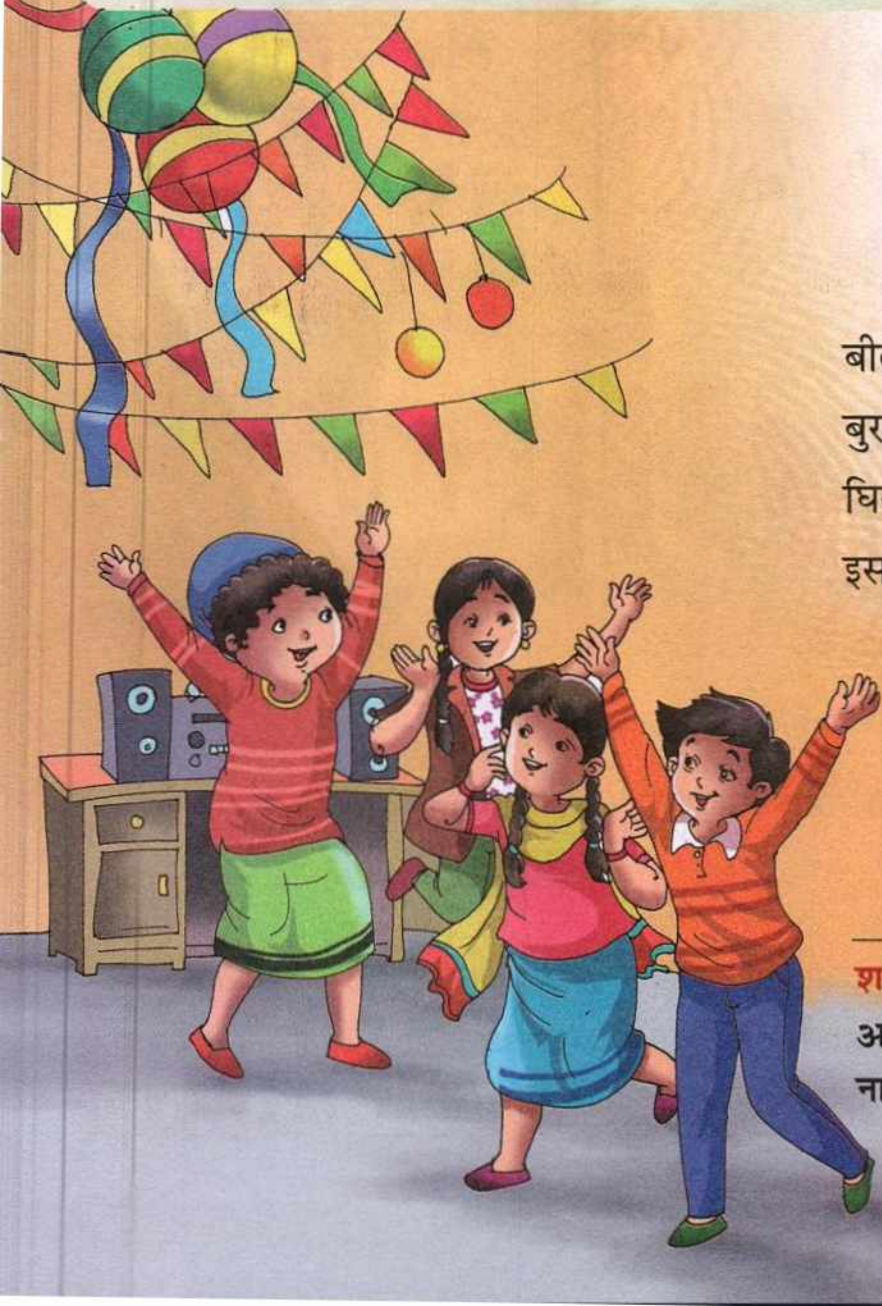

नया साल नई **उमंगें**,
जगा नया विश्वास।
नया साल फिर से ले आया,
एक नया **अहसास**।।

बीते समय की बात छोड़ दें,
बुराइयों से **नाता** तोड़ लें।
घिसी-पिटी ना रहे ज़िंदगी,
इसको भी इक नया मोड़ दें।।

प्रेम करुणा की हवा में,
ले पाएँ सभी फिर साँस।
नया साल फिर से ले आया,
एक नया अहसास।।

शब्दार्थ—**उमंगें**—जोश (exultation), **अहसास**—अनुभव होना (experience), **नाता**—संबंध (relation)

नई राह पर चलना सीखें,
बाधाएँ कुचलना सीखें।
हिम्मत की फिर गाँठ बाँधकर,
दुख-दर्द मसलना सीखें।।

भाईचारे का संदेशा लेकर,
जाएँ सभी के पास।
नया साल फिर से ले आया,
एक नया अहसास।।

इक दूजे की दूरी मिट जाए,
हर इक अब मजबूरी मिट जाएँ।
प्यार पलें सभी के दिल में,
सभी चाह अधूरी मिट जाए।।

सुखमय हो जीवन सारा,
आम रहे ना कोई खास।
नया साल फिर से ले आया है,
एक नया अहसास।।

–सत्य नरायण 'सत्य'

शब्दार्थ–कुचलना–रौंदना (suppress), **आम**–साधारण (ordinary)

जीवन-सूत्र

- अनुभव बताता है कि दृढ़-निश्चय आवश्यकता में पूरी सहायता करता है। *–शेक्सपीयर*
- महापुरुषों की जीवनियाँ हमें प्रेरित करती हैं कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं और अपने बाद अपने पद चिह्न समय की रेत पर छोड़ सकते हैं। *–एच० डब्ल्यू० लांगफेलो*

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

उमंग	विश्वास	अहसास	बुराइयाँ	करुणा
हिम्मत	संदेश	मजबूरी	प्यार	सुखमय

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) नया साल क्या लेकर आया है?

(ख) सभी कैसी हवा में साँस ले पाएँ?

(ग) सबके पास किसका संदेश लेकर जाएँ?

(घ) सबका जीवन कैसा हो?

लिखित

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) राह – ....

....

(ख) करुणा – ....

....

(ग) भाईचारा – ....

....

(घ) सुखमय – ....

....

2. कविता में प्रयुक्त निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) 'नया साल नई उमंगें, जगा नया विश्वास।'

(ख) 'प्रेम करुणा की हवा में, ले पाएँ सभी फिर साँस।'

(ग) 'प्यार पले सभी के दिल में, सभी चाह अधूरी मिट जाए।।'

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कौन नया विश्वास जगा गए?

(ख) कवि क्या-क्या छोड़ने के लिए कह रहे हैं?

(ग) कवि प्रेम करुणा की हवा क्यों लाना चाहते हैं?

(घ) सभी के दिल में क्या होना चाहिए?

(ङ) 'हिम्मत की गाँठ बाँधकर'–कवि इस पंक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) कविता के आधार पर लिखिए कि आप अपने समाज के लिए क्या-क्या करेंगे?

(ख) कविता के किस पद में समानता का संदेश दिया गया है? अर्थ सहित पद लिखिए।

(मूल्यपरक प्रश्न)

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

'उमंग' शब्द में अनुस्वार (ं) का प्रयोग हुआ है तथा 'साँस' शब्द में चंद्रबिंदु (ँ) का।

कविता में से अनुस्वार तथा चंद्रबिंदु वाले शब्द छाँटकर लिखिए–

अनुस्वार (ं) – ....

चंद्रबिंदु (ँ) – ....

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

भरोसा	–	....	प्रेम	–	....
समय	–	....	राह	–	....
ज़िंदगी	–	....	साल	–	....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- नया साल आने पर आप क्या नए-नए काम करते हैं? ऐसा क्यों करते हैं? बताइए।

क्रियाकलाप

1. आपको अपने समाज में जो बुराइयाँ दिखाई देती हैं, उनकी एक सूची बनाइए। इन बुराइयों के कारणों पर कक्षा में सामूहिक चर्चा कीजिए और उन्हें दूर करने के उपाय लिखकर बताइए।
2. सामाजिक बुराइयों से लड़ने वाले किसी एक महानायक का चित्र चिपकाइए और उनके बारे में महत्वपूर्ण बातें लिखिए–

....

....

....

....

....

....

2 बगुला भगत

चिंतन-मनन

ईमानदारी सफल व्यक्ति का आभूषण होती है। ईमानदार व्यक्ति के लिए उसके सत्कर्म, उसके उसूल, उसकी अनुशासन के प्रति निष्ठा ही उसके संस्कार होते हैं। परंतु धूर्त व्यक्ति के लिए धूर्तपंती ही सब कुछ है, जैसे कुएँ में रहने वाले मेढक के लिए कुआँ ही सब कुछ है। इसलिए धूर्त व्यक्ति से मित्रता न रखने में ही ईमानदार व्यक्ति की भलाई है।

गरमी का मौसम था। एक तालाब में पानी सूखता जा रहा था। उस तालाब में बहुत-सी मछलियाँ रहती थीं। तालाब के किनारे एक धूर्त और दुष्ट बगुला भी रहता था। एक दिन वह किनारे पर साधु का वेश बनाए बैठा हुआ था और तालाब की मछलियों से अपना पेट भरने का उपाय सोच रहा था।

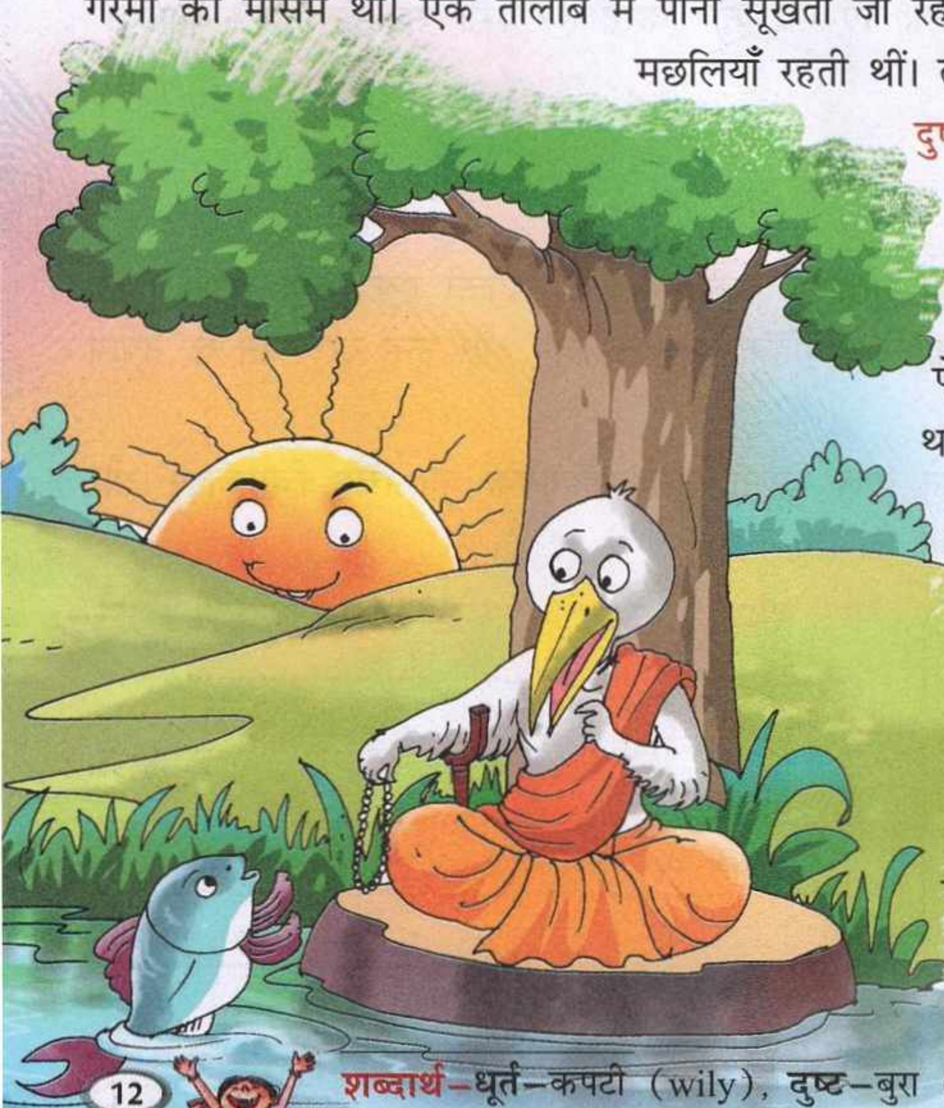

तालाब की मछलियों ने बगुले को बहुत उदास देखा, तो वे उसका कुशल पूछने आ गईं।

"क्या बात है मामा? आज बहुत चिंतित हो।"

"बस तुम्हीं लोगों की चिंता में हूँ।"

"हमारी चिंता में? भला क्यों?"

शब्दार्थ–**धूर्त**–कपटी (wily), **दुष्ट**–बुरा (evil-minded), **कुशल पूछना**–हाल-चाल जानना (to enquire about welfare), **चिंता**–फ़िक्र (worry)

"इस तालाब का पानी दिनों-दिन कम हो रहा है। गरमी बढ़ रही है। धीरे-धीरे तुम सब मृत्यु के मुख में चली जाओगी।"

"तो हम क्या करें, मामा? तुम्हीं कोई उपाय बताओ न!" मछलियों ने घबराकर कहा।

"अब एक ही उपाय है। मैं एक-एक कर तुम सबको अपनी चोंच में पकड़कर दूर एक बड़े तालाब में छोड़ आऊँ।"

"लेकिन मामा! इस दुनिया में आज तक कोई बगुला ऐसा नहीं हुआ जिसने मछलियों की भलाई के बारे में सोचा हो। भला हम तुम पर कैसे विश्वास कर लें?"

बगुले ने अब अपनी चाल चली–"तुम ठीक कहती हो। जिस तरह एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है, उसी तरह एक बगुले ने सारे बगुला समाज को बदनाम कर रखा है। तुम लोग ऐसा करो, किसी एक मछली को मेरे साथ भेज दो। मैं उसे वह तालाब दिखा लाऊँगा। तुम उससे पूछ लेना। अगर विश्वास हो जाए, तो तुम सब एक-एक कर मेरे साथ चल पड़ना।"

मछलियाँ धूर्त बगुले की चाल में आ गईं। उन्होंने एक मछली को बगुले के साथ भेज दिया। बगुला उसे तालाब दिखाकर ले आया। उस मछली ने बड़े तालाब का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया। उससे प्रभावित होकर सभी मछलियाँ चलने को तैयार हो गईं।

अब बगुला उस तालाब में से एक मछली ले जाता और दूर जंगल में एक बड़े तालाब के किनारे बड़ी चट्टान पर बैठ उसे मारकर खा जाता। इसी तरह उसने तालाब की सारी मछलियाँ खा लीं। चट्टान के पास मछलियों की हड्डियों का ढेर लग गया।

शब्दार्थ–उपाय–तरीका (cure), **बदनाम**– जिसका काम बुरा हो (notorious)

तालाब में केवल एक केकड़ा बचा था। बगुला उसे भी खाना चाहता था। केकड़ा चालाक था। वह बोला–"मैं तुम्हारी चोंच में दबकर नहीं चल सकता। कहो तो गरदन पर बैठकर चलूँ?"

बगुले ने सोचा–"तू किसी तरह चट्टान तक तो चल। फिर मैं खा ही जाऊँगा।" इस तरह उसने केकड़े की बात मान ली।

बगुला अपनी गरदन पर केकड़े को लेकर जब चट्टान के पास पहुँचा, तब केकड़ा मछलियों की हड्डियों का ढेर देखकर सारा मामला समझ गया। उसने बगुले की गरदन में अपने डंक गड़ाए और बोला–"दुष्ट तू मुझे सीधी तरह तालाब के किनारे ले चलता है या गरदन दबा दूँ।"

बगुला पीड़ा से कराह उठा। वह केकड़े को चुपचाप तालाब के किनारे ले गया। केकड़े ने कहा–"अब तुझे अपनी करनी का फल भी मिलना चाहिए।" उसने बगुले की गरदन दबाकर उसे खत्म कर दिया। केकड़ा तालाब के पानी में चला गया।

उसने जाते-जाते कहा–"धूर्त और दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी नहीं रहते। एक-न-एक दिन उनकी यही दशा होती है।"

–हरिकृष्ण देवसरे

शब्दार्थ–चालाक–होशियार (clever), **पीड़ा**–दर्द (pain), **दशा**–हालत (condition)

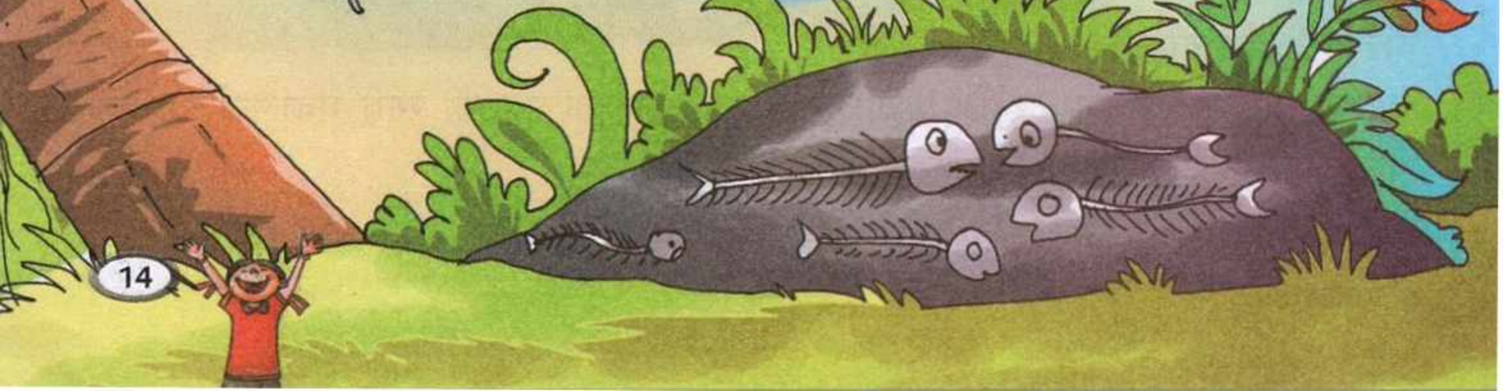

जीवन-सूत्र

- धूर्त व्यक्तियों की संगत में धन और मान दोनों की हानि होती है।
- सज्जन व्यक्ति अपनी सज्जनता नहीं छोड़ता, वहीं धूर्त व्यक्ति अपना धूर्तपना नहीं छोड़ता।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

मौसम	मछलियाँ	धूर्त	दुष्ट	साधु	चिंतित
कुशल	मृत्यु	विश्वास	प्रभावित	चट्टान	हड्डियों

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) मछलियाँ कहाँ रहती थीं?

(ख) तालाब के किनारे कौन रहता था?

(ग) बगुला मछलियों को कहाँ ले जाकर मारता था?

(घ) मछलियाँ बगुले को क्या कहकर पुकारती थीं?

लिखित

1. कहानी के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के आगे क्रम संख्या लिखिए–

(क) "मैं एक-एक करके तुम सबको अपनी चोंच में पकड़कर दूर एक बड़े तालाब में छोड़ आऊँ।" ☐

(ख) धूर्त और दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी नहीं रहते। ☐

(ग) चट्टान के पास मछलियों की हड्डियों का ढेर लग गया। ☐

(घ) बगुला पीड़ा से कराह उठा।

(ङ) एक तालाब में पानी सूखता जा रहा था।

(च) "मैं तुम्हारी चोंच में दबकर नहीं चल सकता। कहो तो गरदन पर बैठकर चलूँ?"

(छ) मछलियाँ धूर्त बगुले की चाल में आ गईं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बगुला तालाब के किनारे किसका वेश बनाकर बैठा था और वह क्या सोच रहा था?

(ख) मृत्यु के मुख से बचने के लिए बगुले ने मछलियों को क्या उपाय बताया?

(ग) बगुला मछलियों का क्या करता था?

(घ) केकड़ा बगुले की धूर्तता से कैसे परिचित हुआ? उसने अपनी जान कैसे बचाई?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) प्रस्तुत कहानी हमें क्या संदेश देती है? अपने शब्दों में विस्तार से लिखिए।

(ख) किसी को धोखा देना अच्छा होता है या नहीं? तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

मछली	–	....मछलियाँ....	बगुला	–	......बगुले......
हड्डी	–	....	केकड़ा	–	....
कली	–	....	हवा	–	....
नदी	–	....	दिशा	–	....
नाली	–	....	चर्चा	–	....

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द तालिका में से ढूँढ़कर लिखिए–

तेज़ रात जीवन बुरा सरदी गलत प्रसन्न पास

गरमी	–	....	दिन	–	....
उदास	–	....	धीरे	–	....
मृत्यु	–	....	दूर	–	....
भला	–	....	ठीक	–	....

3. "लेकिन मामा! इस दुनिया में आज तक कोई बगुला ऐसा नहीं हुआ जिसने मछलियों की भलाई के बारे में सोचा हो।"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्द संज्ञा हैं–

जैसे– बगुला, मछली – प्राणियों के नाम

भलाई – भाव का नाम

नाम ही संज्ञा कहलाते हैं, अर्थात् किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

- व्यक्तिवाचक संज्ञा – विशेष व्यक्ति, विशेष वस्तु, विशेष स्थान के नाम; जैसे– रोहन, डॉ० राजेंद्र प्रसाद, स्वर्ण-मंदिर, अमृतसर, लाल-किला।
- जातिवाचक संज्ञा – समस्त जातियों के नाम; जैसे–मामा, तालाब, तितली।
- भाववाचक संज्ञा – गुण, दशा, भावों के नाम; जैसे– मित्रता, प्यास, गरमी, चिंतित।

व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा से रिक्त स्थान भरिए–

(क) .... का मौसम था।

(ख) .... ने घबराकर कहा।

(ग) इस कहानी के लेखक का नाम .... है।

गरमी, मछलियों, हरिकृष्ण देवसरे

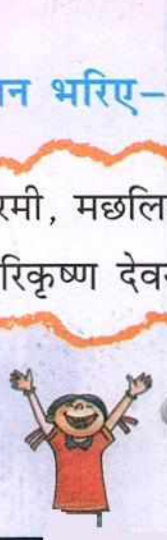

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- यदि आप केकड़े की जगह होते तो क्या करते? अपनी रक्षा किस चालाकी से करते?

क्रियाकलाप

- जल, नभ एवं थल (पानी, आकाश, धरती) पर रहने वाले प्राणियों (पक्षी एवं जानवरों) की सूची बनाइए। तीनों समूहों में से एक-एक प्राणी के बारे में निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जानकारी एकत्र कीजिए–

  1. कहाँ रहते हैं?
  2. क्या खाते हैं?
  3. इनका जीवन चक्र क्या है?

दिए गए स्थान पर उनका चित्र चिपकाइए–

3 काम सब अच्छे हैं

चिंतन-मनन

आचार्य विनोबा भावे महात्मा गांधी के अग्रणी शिष्यों में से एक थे। वे गांधी जी के सत्य, अहिंसा और समय पालन के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होंने गांधी जी के साथ कई आंदोलनों में भाग लिया। वे बच्चों को पढ़ने-लिखने तथा आस-पास स्वच्छता रखने के लिए जागरूक करते थे।

विनोबा जी हमारे देश के एक महापुरुष थे। वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी थे। वे गरीबों के सहायक थे। उनका भूदान-यज्ञ बहुत प्रसिद्ध है। वे ज़मींदारों से भूमि दान में लेकर भूमिहीन किसानों को देते थे।

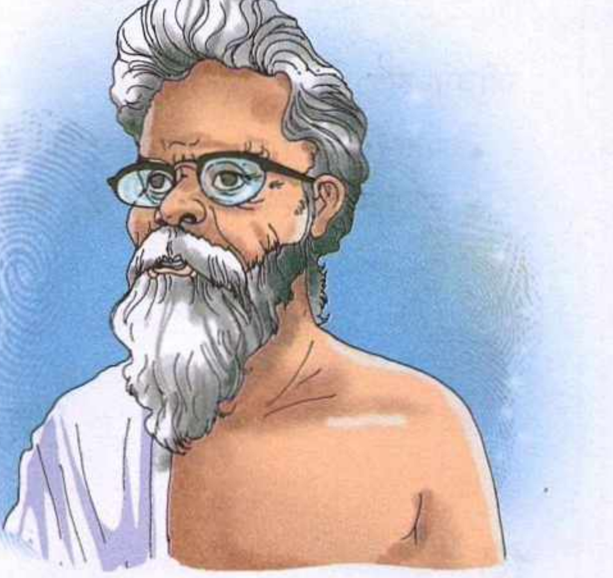

विनोबा जी एक बार भूदान-यज्ञ के सिलसिले में यात्रा पर थे। यात्रा में वे एक गाँव पहुँचे। वहाँ की पाठशाला में वे ठहरे। उस पाठशाला में शौचालय नहीं था। बच्चे पाठशाला के आस-पास ही गंदगी करते थे इसलिए पाठशाला के आस-पास गंदगी भरी थी।

विद्यालय के पास गंदगी देखकर विनोबा जी को दुख हुआ। उन्होंने छात्रों से पूछा, "तुम्हारी पाठशाला की सफ़ाई कौन करता है?" लड़के बोले, "एक आदमी सवेरे आता है और झाड़ू लगाकर चला जाता है।"

शब्दार्थ—अनुयायी—अनुसरण करने वाला (follower), **भूदान**—भूमि का दान (land donation), **सिलसिले**—क्रम (sequence), **छात्रों**—विद्यार्थी (student)

विनोबा जी ने फिर पूछा, "गंदगी कौन करता है?"

लड़कों ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। तब विनोबा जी बोले, "देखो! जब गंदगी तुम करते हो, तब सफ़ाई भी तुम लोगों को ही करनी चाहिए।"

विनोबा जी की बातें सुनकर एक लड़के ने कहा, "गंदगी कौन साफ़ करेगा? हम कोई सफ़ाईवाले तो नहीं हैं।"

विनोबा जी मुसकराए। लड़के को अपने पास बुलाकर प्रेम से पूछा, "जब तुम छोटे थे, तब तुम्हारे हाथ-मुँह कौन धोता था? गंदगी कौन साफ़ करता था?"

लड़का बोला, "मेरी माँ।"

विनोबा जी ने कहा, "अच्छा! ऐसा करने से क्या तुम्हारी माता जी सफ़ाई करने वाली हो गईं?"

लड़का बोला, "जी नहीं, माँ तो माँ है।"

विनोबा जी बोले, "हाँ। जो गंदगी साफ़ करता है, वह सचमुच माँ का ही काम करता है। काम सब अच्छे हैं।"

जीवन-सूत्र

- महान विचार ही कार्य रूप में परिणत होकर महान कार्य बनते हैं।
- जो कर्म करने में शर्माता है, वह सदैव परतंत्र रहता है।

अभ्यास के लिए

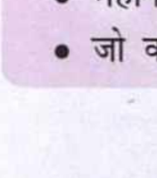

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

महापुरुष   अनुयायी   भूदान-यज्ञ   प्रसिद्ध   ज़मींदार

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) विनोबा जी किसके अनुयायी थे?

(ख) विनोबा जी का कौन-सा यज्ञ प्रसिद्ध है?

(ग) विनोबा जी यात्रा में कहाँ ठहरे थे?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) विनोबा जी हमारे देश के एक .... थे।

(ख) विनोबा जी .... के अनुयायी थे।

(ग) एक आदमी .... आता है।

(घ) काम सब .... हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों को पाठ के क्रमानुसार लगाइए–

(क) "जी नहीं, माँ तो माँ है।"

(ख) उस पाठशाला में शौचालय नहीं था।

(ग) "तुम्हारी पाठशाला की सफ़ाई कौन करता है?"

(घ) वे गरीबों के सहायक थे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भूदान का अर्थ बताइए। विनोबा जी का भू-दान यज्ञ क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) विनोबा जी को दुख क्यों हुआ?

(ग) विद्यालय की सफ़ाई कौन करता था?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) पाठ का शीर्षक 'काम सब अच्छे हैं' क्यों रखा गया है? (**मूल्यपरक प्रश्न**)

(ख) विनोबा भावे जी ने छात्रों को स्वच्छता का पाठ कैसे सिखाया?

भाषा ज्ञान

1. दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए–

ने, को, का, पर, की, में, के

(क) विनोबा जी गरीबों .... सहायक थे।

(ख) विनोबा जी भूदान-यज्ञ के सिलसिले में यात्रा .... थे।

(ग) विनोबा जी पाठशाला .... ठहरे थे।

(घ) विनोबा जी .... छात्रों से पूछा।

(ङ) विनोबा जी ने लड़के .... अपने पास बुलाया।

(च) हमें पाठशाला .... सफ़ाई करनी चाहिए।

(छ) विनोबा जी .... भूदान-यज्ञ प्रसिद्ध है।

2. नीचे दिए गए विराम-चिह्नों के सामने उनके नाम विकल्पों में से चुनकर लिखिए–

(क) (!) .... (पूर्णविराम/विस्मयादिबोधक)

(ख) (,) .... (अल्पविराम/प्रश्नवाचक)

(ग) (।) .... (अल्पविराम/पूर्णविराम)

(घ) (?) .... (प्रश्नवाचक/पूर्णविराम)

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- घर में आप कौन-कौन-से काम करते हैं? कुछ ऐसे कार्यों की सूची बनाइए जो आप पसंद नहीं करते। अब बताइए कि वे कार्य आपको क्यों पसंद नहीं हैं?

क्रियाकलाप

1. अंतर ढूँढ़िए–

जो बच्चा सबसे कम समय में अंतर ढूँढ़ेगा, वही बुद्धिमान या बुद्धिमती कहलाएगा।

2. सरकार ने देश में 'स्वच्छता अभियान' चलाया है। आप इस अभियान में किस प्रकार अपना योगदान दे सकते हैं?

गतिविधि-1

बाबा आमटे

अन्ना हज़ारे

जयप्रकाश नारायण

....

अध्यापन-संकेत—बाबा आमटे, अन्ना हज़ारे, जयप्रकाश नारायण के चित्र चिपकाइए। रिक्त स्थान पर अपने किसी प्रिय समाज सुधारक का चित्र चिपकाइए तथा नाम लिखकर उनके कार्यों की चर्चा कीजिए।

हमारे प्रेरणा स्त्रोत

संत कवि वेमन रेड्डी

"कपूर और नमक देखने में एक जैसे हैं लेकिन उनके गुणों का अंतर परखने पर समझ में आता है। उसी प्रकार मनुष्य भी एक जैसे दिखाई देते हैं, उनके साथ रहने पर ही गुणों एवं अवगुणों की पहचान होती है।"

ये पंक्तियाँ हैं–चौदहवीं शताब्दी के आंध्र के प्रसिद्ध कवि 'वेमन' की। 'वेमन' के पिता का नाम कुमारगिरी वेमन रेड्डी था, जो 'कोंडवीडू' (आज का आंध्र प्रदेश) के राजा थे। ये पिता की तीसरी संतान थे। आधार ग्रंथों के अनुसार इनका काल चौदहवीं शती माना जाता है। इन्होंने 'शिवयोगी' के साथ रहकर 'योग' का अध्ययन किया। विषय में प्रवीणता पाने के पश्चात् इन्होंने आंध्र का भ्रमण कर समाज में काव्य के माध्यम से जागृति लाने का प्रयास किया।

इनकी कविताएँ चार पंक्तियों की होती हैं, जिनमें जीवन का अर्थ छिपा रहता है। सामान्य लोगों की समझ में आने वाली सरल भाषा में लिखी इनकी कृतियों को पढ़कर लोगों ने इनकी सराहना करते हुए कहा है, "वेमन की पंक्तियाँ वेदों की पंक्तियों के समान हैं।" 'चेतू पाड्यम्' शैली में लिखी कविताओं को लोगों ने बहुत पसंद किया।

इनकी कविताओं का अंग्रेज़ी में भी अनुवाद किया गया है तथा इन्हें आंध्र प्रदेश के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इनकी स्मृति में सरकार ने 'योगी वर्मा यूनिवर्सिटी' का निर्माण करवाया है। आज भी इनका काव्य आंध्र की जनता के लिए मार्गदर्शक है।

4 अब बतलाओ

चिंतन-मनन
पशुओं में अनुशासन का कोई महत्व नहीं है, इसलिए ही उनका जीवन आतंकित व असुरक्षित रहता है।

कोने में बिल्ली जो देखी।
भागा चूहा आँख बंदकर।
पीछे-पीछे बिल्ली दौड़ी।
तेज़ चाल से उछल-उछलकर।।

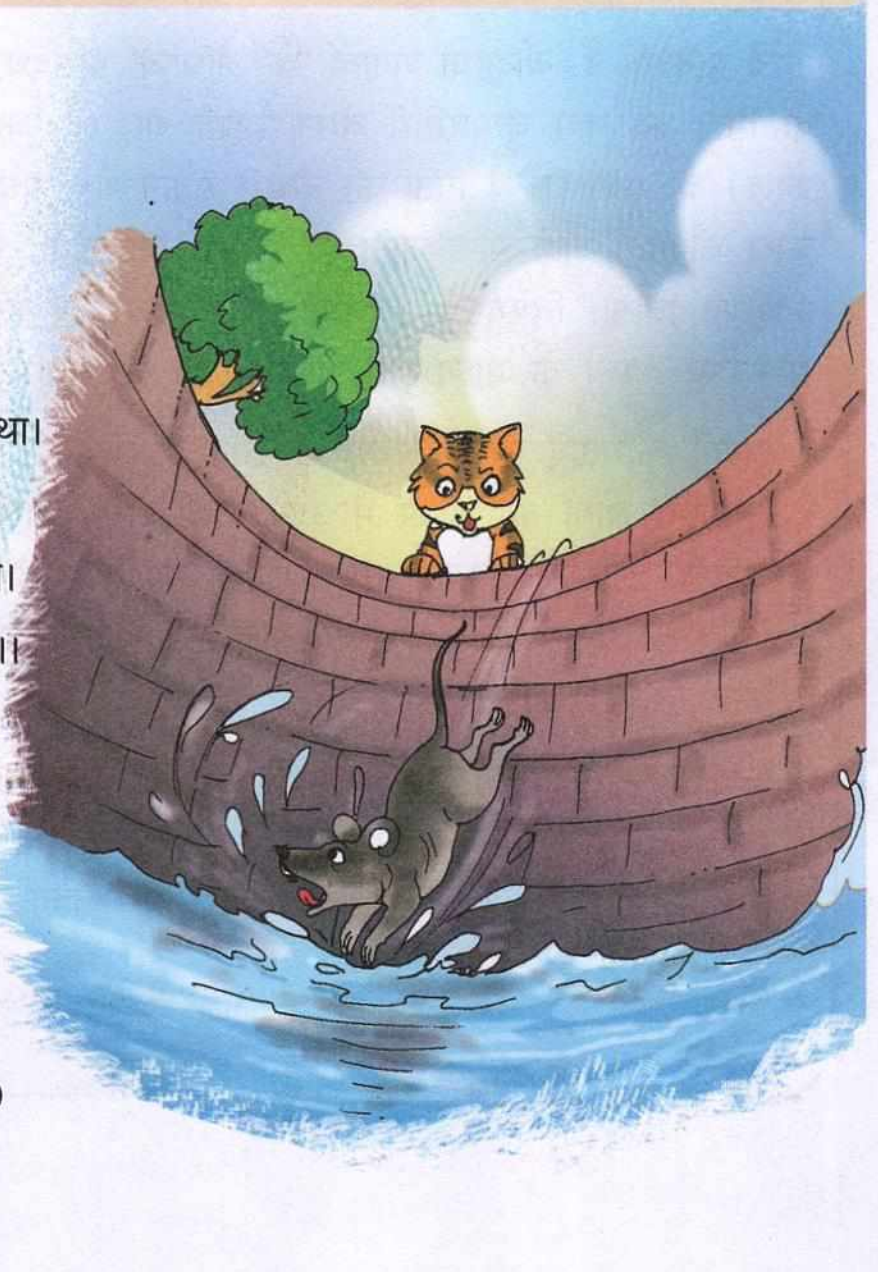

चूहे को कुछ पता नहीं था।
गहरा कुआँ पड़ा सामने।
आँख बंद होने के कारण।
पानी में गिर लगा काँपने।।

बिल्ली रानी लगी सोचने।
अब मैं कैसे भूख मिटाऊँ।
कौन यत्न कर मैं चूहे को।
पानी से बाहर ले आऊँ।।

शब्दार्थ–यत्न–कोशिश (effort)

चुपके-चुपके गई, कहीं से।
रस्सी एक ढूँढ़कर लाई।
फिर उसने वह जल्दी-जल्दी।
कुएँ के अंदर लटकाई।।

चूहे ने वह रस्सी पकड़ी।
और साथ ही ऊपर **ताका**।
उसी समय बिल्ली रानी ने।
कुएँ में नीचे था झाँका।।

मेरे साथी अब बतलाओ।
चूहा क्या ऊपर आएगा?
या रस्सी को छोड़ कुएँ के
पानी में ही मर जाएगा?

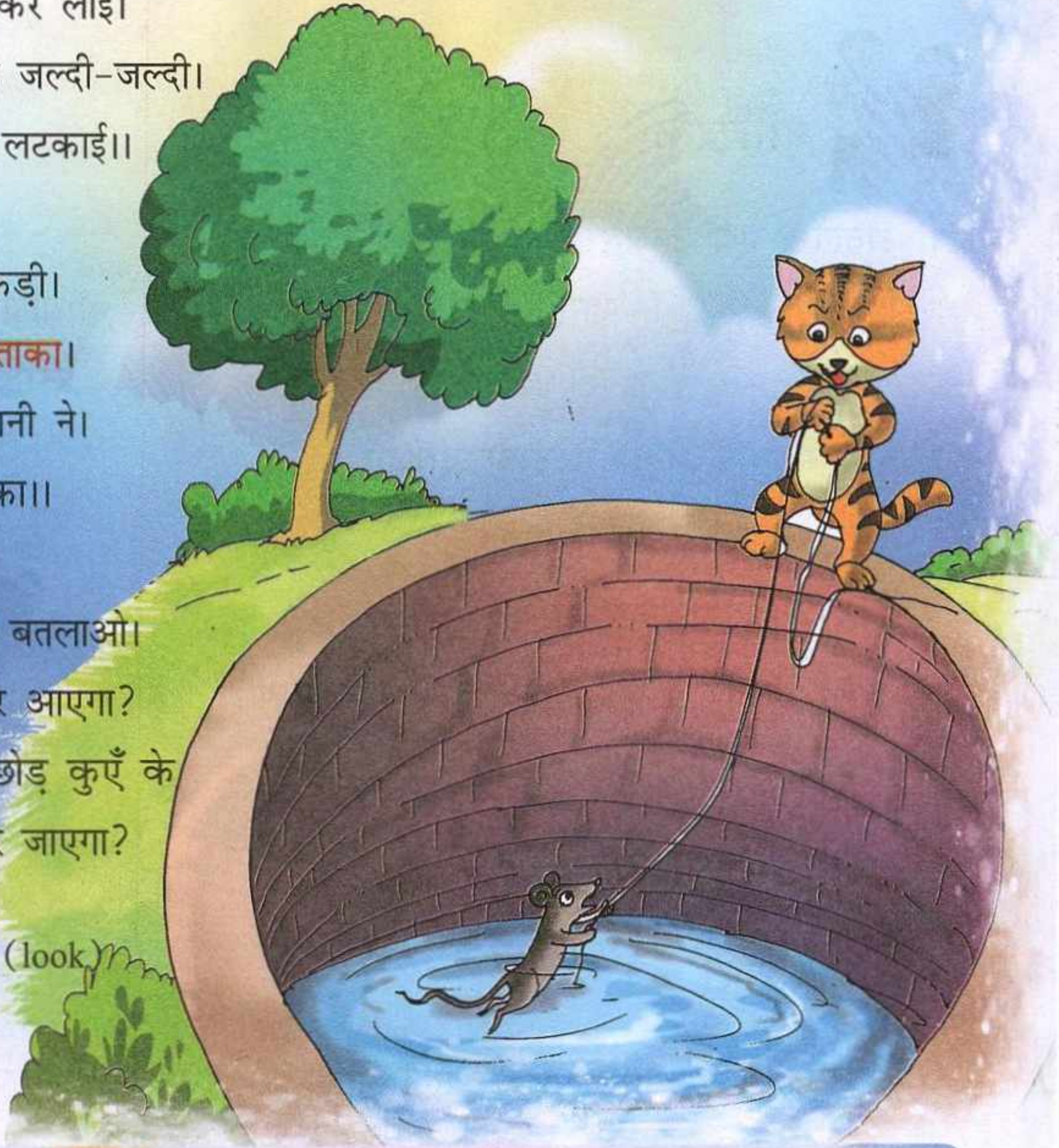

शब्दार्थ–ताका–देखा (look)

जीवन-सूत्र

- हमेशा डरते रहने से अच्छा तो यह है कि खतरे का एक बार सामना कर ही लिया जाए। *–नीतिसूत्र*
- खतरा अपने साथ भय लाता है और भय अपने साथ और भी खतरा। *–रिचर्ड बेक्सटर*

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

बिल्ली	गहरा	कुआँ	आँख
भूख	यत्न	जल्दी	रस्सी

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) चूहा क्यों भागा?

(ख) चूहे को क्या पता नहीं था?

(ग) बिल्ली ने कुएँ के अंदर क्या लटकाया?

(घ) बिल्ली ने कहाँ झाँका?

लिखित

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) चूहे ने बिल्ली को कहाँ देखा?

(ख) चूहा काँपने क्यों लगा?

(ग) बिल्ली क्या सोचने लगी?

(घ) चूहे ने क्या पकड़ा?

(ङ) जब चूहे ने ऊपर देखा तब बिल्ली क्या कर रही थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) अंत में चूहे ने क्या किया होगा?

(ख) यदि आप चूहे की जगह होते तो क्या करते? अपने शब्दों में तीन-चार वाक्य में उत्तर लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए–

बिल्ली –	....	चूहा –	....
शेर –	....	ऊँट –	....
हाथी –	....		

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

पीछे –	....	तेज़ –	....
गहरा –	....	बंद –	....
बाहर –	....	जल्दी –	....

3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द चुनकर लिखिए–

मज़दूर मोची किसान धोबी लकड़हारा बढ़ई

जो खेतों में काम करता है – ....

जो सड़क बनाता है – ....

जो लकड़ी काटता है – ....

जो कपड़े धोता है	–	....
जो जूते बनाता है	–	....
जो लकड़ी से फ़र्नीचर बनाता है	–	....

4. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

नाम वाले शब्द	**काम वाले शब्द**
बिल्ली	भागा
चूहा	काँपने
आँख	आऊँ

कविता में प्रयुक्त कुछ ऐसे ही शब्द छाँटिए और लिखिए–

नाम वाले शब्द – ....

काम वाले शब्द – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. जब बिल्ली ने रस्सी लटकाई तो चूहे ने क्या सोचा होगा?
2. क्या आपके साथ भी कोई ऐसी घटना घटी जब आप मुसीबत में पड़ गए हों? ऐसी स्थिति में आपने क्या किया?

क्रियाकलाप

- कुछ लोग घरों में पशु-पक्षी पालते हैं, उन्हें पालतू जानवर कहते हैं। नीचे दिए गए चित्रों में से पालतू जानवर छाँटकर उन्हें कोई प्यारा-सा नाम दीजिए-

पशु-पक्षी

....

....

....

....

....

नाम

....

....

....

....

....

5 स्वच्छता का पाठ

चिंतन-मनन

मानव इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसका उत्तरदायित्व केवल अपने तथा परिवार के सदस्यों तक सीमित नहीं रह सकता। उसे अपनी स्वच्छता के प्रति संवेदनशीलता का दायरा अपने निवास-स्थान से बढ़ाकर, मोहल्ले तथा देश तक बढ़ाना चाहिए।

हर साल की तरह इस साल भी गरमियों की छुट्टियों में गोलू अपने दादा-दादी जी के यहाँ आया था। गोलू को दादा-दादी जी के यहाँ बड़ा ही मज़ा आता था। पर इस बार वह उतना खुश नहीं था जितना हर साल रहता था।

"अरे गोलू बेटा क्या हुआ? मैं देख रही हूँ इस बार तुम यहाँ आकर खुश दिखाई नहीं दे रहे। अब बड़े हो रहे हो तो क्या गाँव पसंद नहीं आ रहा?"

"नहीं दादी, ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे यहाँ हमेशा की तरह ही अच्छा लग रहा है। पर..."

"पर क्या मेरा राजा बेटा? कोई परेशानी है!"

"मेरे सभी दोस्त बीमार हैं तो खेल ही नहीं पा रहा हूँ। बोर हो रहा हूँ।"

"हाँ वो तो है, पर अब कर भी क्या सकते हैं?"

"कर क्यों नहीं सकते दादी। ये सब आप लोगों के कारण ही तो बीमार हैं।"

"अरे, ये क्या कह रहे हो? क्या कोई भी चाहेगा कि उनका बच्चा बीमार पड़े और कैसे हुए हम ज़िम्मेदार भला?"

"दादी, यहाँ हर जगह कितनी गंदगी है। आप सभी लोग कचरा यहाँ-वहाँ फेंक देते हो। कभी सोचा है इन पर जो मक्खियाँ बैठती हैं उनसे हमें कितना नुकसान होता है?"

"नुकसान कैसा बेटा?"

"दादी, ये मक्खियाँ इस कचरे से उड़कर हमारे ऊपर बैठती हैं, हमारे खाने पर बैठती हैं, यहाँ तक कि हमारे कपड़ों पर भी।"

"अरे बेटा, इस सब की तो हमें आदत हो गई है। हमें कोई बीमारी नहीं होगी।"

"ऐसा नहीं होता दादी। अच्छा, कल भीरू काका आए थे तो वह बता रहे थे न कि गाँव के सभी बच्चों को उलटी-दस्त हो रहे हैं।"

"हाँ, कह तो रहे थे।"

"आजकल हर जगह सफ़ाई अभियान चलाया जा रहा है। स्वच्छता के बारे में रेडियो, टी०वी० सभी जगह बता रहे हैं, पर आप लोग तो सुनकर-देखकर अनसुना-अनदेखा कर देते हो। आप लोग हो कि कुछ सीखना ही नहीं चाहते।"

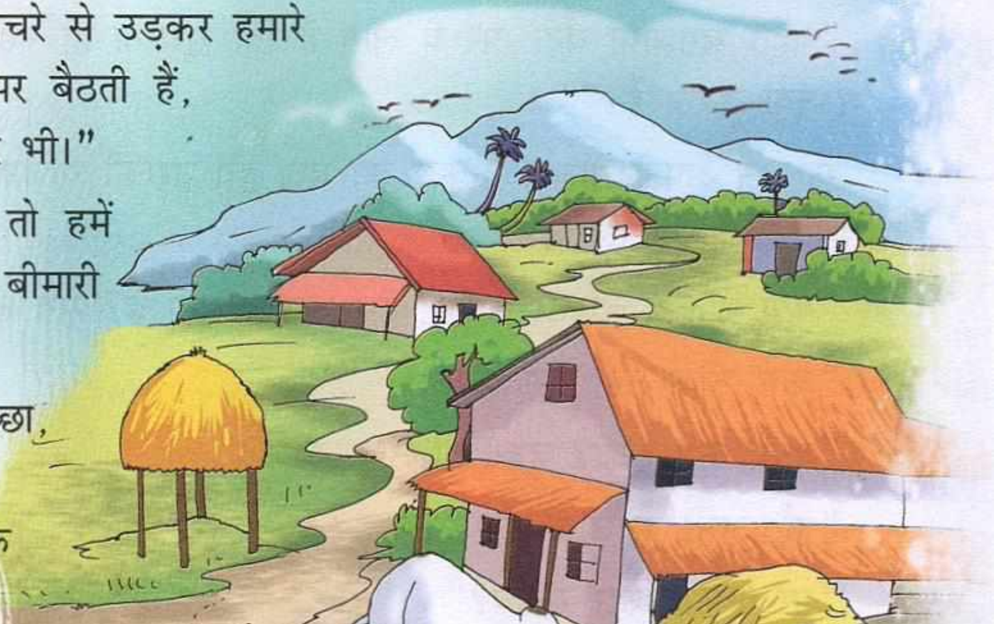

शब्दार्थ–ज़िम्मेदार–किसी कार्य, बात आदि का दायित्व लेने वाला व्यक्ति (responsible) **कचरा**–कूड़ा-करकट (garbage), **अभियान**–दल-बल सहित चल पड़ना (expedition)

"अरे मेरे अकेले से थोड़े न कुछ होगा। वैसे भी अब बची ही कितनी ज़िंदगी है।"

"ठीक है दादी, मैं ही कुछ करता हूँ।"

गोलू तभी अस्पताल गया और वहाँ डॉक्टर से इस बारे में बात की। उन्होंने भी स्वीकारा कि गंदगी के कारण ही सबकी तबियत खराब हुई है।

"डॉक्टर अंकल, आप सबको समझाते क्यों नहीं हैं कि सफ़ाई का ध्यान रखें।"

"बहुत समझाया बेटा, पर ये लोग हैं कि सुधरना ही नहीं चाहते। अब तुम ही बताओ हमें क्या करना है?"

गोलू ने अपनी योजना डॉक्टर को बता दी। उसकी योजनानुसार डॉक्टर ने गाँववालों को अस्पताल बुलवा लिया।

"क्या बात है डॉक्टर साहब, हमें क्यों बुलाया है? सब ठीक है न?"

"कुछ ठीक नहीं रामू काका।"

"क्यों, क्या हुआ? बच्चे तो ठीक हैं न?"

"हाँ, अभी तो ठीक हैं पर..."

"पर क्या डॉक्टर साहब?"

"देखिए आप लोग, अभी तो आपके बच्चे ठीक हैं पर कुछ दिनों बाद ये लोग वापस बीमार हो जाएँगे और बीमार हो गए तो भी कोई बात नहीं, मैं तो रहता ही हूँ ठीक करने के लिए लेकिन कुछ दिनों बाद मैं भी नहीं रहूँगा। इस गाँव से चला जाऊँगा।"

"चला जाऊँगा...मतलब डॉक्टर साहब?"

"मतलब ये कि मेरा स्थानांतरण हो गया है दूसरे गाँव में और नए डॉक्टर को आने में कम-से-कम एक महीना तो लग ही जाएगा।"

"और आप लोग जिस तरह से रहते हैं उसमें तो बच्चों का बार-बार बीमार पड़ना आम बात है। अभी कुछ दिन पहले भी तो बच्चे बीमार पड़े थे।"

"डॉक्टर साहब ऐसा न कहें। हम नहीं चाहते कि बच्चे बार-बार बीमार पड़ें।"

"आप जो भी कहेंगे हम करेंगे।"

शब्दार्थ– **योजना**–कार्य करने की रूपरेखा (planning), **स्थानांतरण**–तबादला (transfer)

"मैंने आप लोगों से पहले भी कहा है कि, स्वच्छता का ध्यान रखें पर आप लोगों के तो कान में जूँ तक नहीं रेंगती। अब जब बच्चों का इलाज नहीं हो पाएगा तब समझोगे और तब तक शायद बहुत देर हो चुकी हो।"

"नहीं-नहीं डॉक्टर साहब। आप कहें हम क्या करें?"

"कुछ नहीं बस अपने घर का जो भी कचरा है उसे सरकार द्वारा रखवाए गए कचरा पेटी में डालें, घर के अंदर व बाहर साफ़-सफ़ाई रखें। बस यही करना है।"

"ठीक है डॉक्टर साहब हम सभी लोग ऐसा ही करेंगे।"

बच्चे ठीक होकर अस्पताल से घर चले गए और देखते-देखते एक महीना निकल गया।

इधर गोलू की छुट्टियाँ भी खत्म होने जा रही थीं। तभी एक दिन डॉक्टर साहब ने सभी को फिर अस्पताल में बुलाया।

"क्या बात है डॉक्टर साहब, आप जा रहे हैं क्या?"

"वैसे देखिए जैसा आपने कहा, हमने वैसा ही किया।"

"आप लोगों को एक खुशखबरी देनी है।"

"कैसी खुशखबरी, डॉक्टर साहब?"

"आज ही मुझे पता चला है कि आपके गाँव की साफ़-सफ़ाई देखकर सरकार ने इसे पुरस्कार के लिए चुना है।"

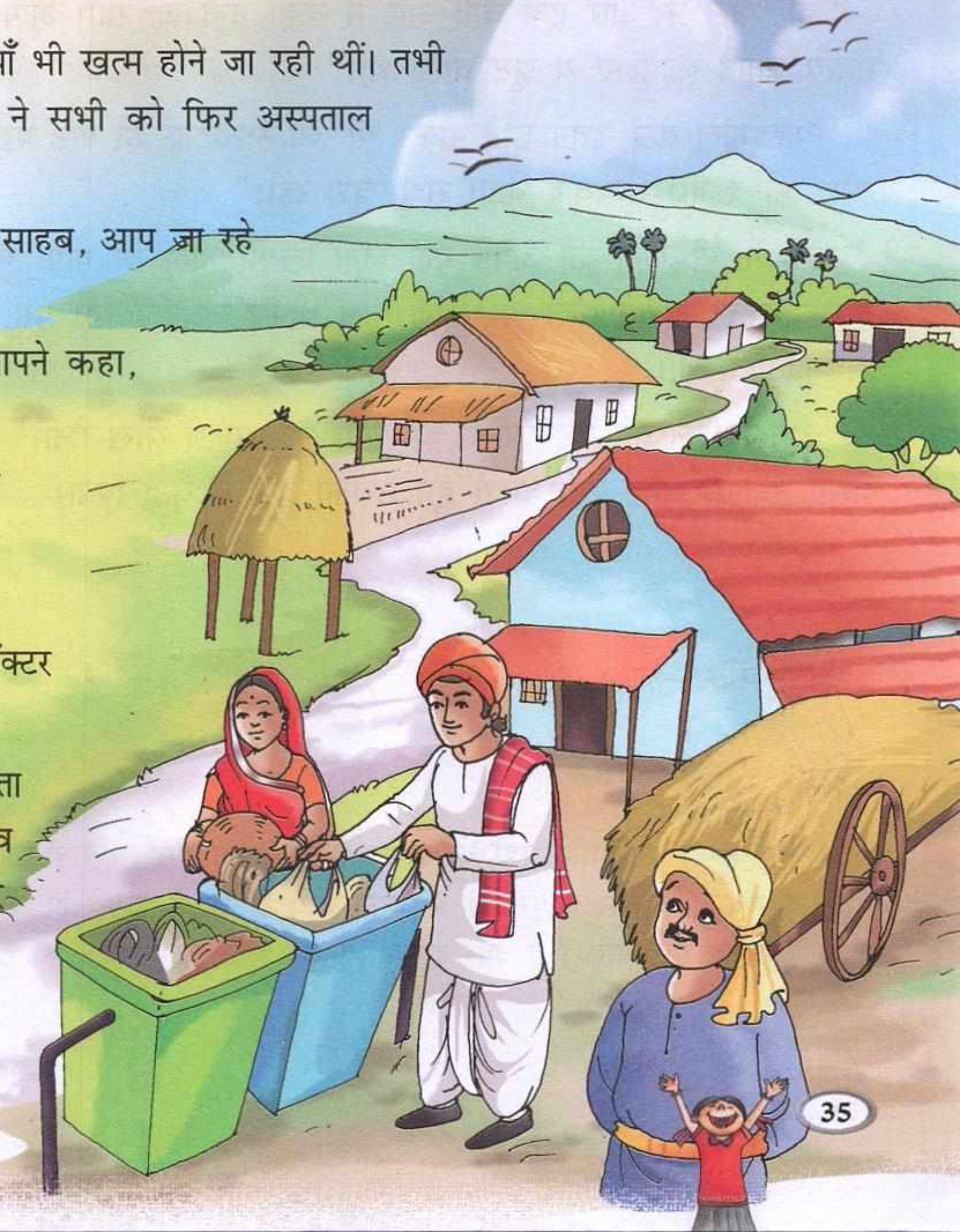

"क्या कह रहे हैं डॉक्टर साहब! ये सब आपके ही कारण संभव हुआ है।"

"धन्यवाद आप सभी का। पर आप लोग ये भी देखिए कि आपके ऐसा करने पर आपके बच्चे बीमार नहीं पड़े।"

"सही कहा आपने, काश हम आपकी बात पहले ही मान लेते?"

हमें आपका धन्यवाद तो देना ही चाहिए। आपके कारण ही ये संभव हो पाया है।"

"धन्यवाद देना है तो गोलू को दीजिए। आज उसी के कारण ये सब हुआ है। उसी ने मुझसे ऐसा करने को कहा था।"

"गोलू ने!"

"हाँ, गोलू ने, और एक बात और मैं कहीं नहीं जा रहा। आप लोगों को स्वच्छता का महत्व बताने के लिए ये झूठ बोला था।"

"वाह गोलू बेटा, इतने छोटे होकर भी हमें स्वच्छता का पाठ पढ़ा दिया और एक अच्छी सीख भी दे दी। धन्यवाद बेटा। सदा खुश रहो।"

दादी ने भी गोलू को अपने गले लगा लिया। गोलू के पापा भी उसे लेने आ गए थे। उसके स्कूल खुलने वाले थे। आज गोलू वापस जा रहा था। पूरा गाँव उसे बस स्टॉप पर छोड़ने आया था।

"अगले साल की छुट्टियों में हमें कोई नई अच्छी सीख देना।" गाँववालों ने और उसके दोस्तों ने एक साथ ऐसा कहते हुए उसको बस में बैठा दिया।

–कीर्ति श्रीवास्तव

शब्दार्थ–सीख–शिक्षा (lesson)

जीवन-सूत्र

- मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाए तो जल्दी खराब हो जाती है। *–स्वेट मार्डन*
- प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है और इसके विपरीत मलिनता ही रोग है। *–हैली बर्टन*

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

छुट्टियाँ	बीमार	मक्खियाँ	अभियान	स्वच्छता
डॉक्टर	स्थानांतरण	पुरस्कार	धन्यवाद	स्टॉप

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) गोलू कहाँ आया था?

(ख) गोलू बोर क्यों हो रहा था?

(ग) बच्चों की बीमारी का कारण क्या था?

(घ) गोलू ने अस्पताल में किससे बात की?

(ङ) गोलू किसके साथ वापस आ रहा था?

लिखित

1. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) आजकल हर जगह सफ़ाई .... चलाया जा रहा है।

(ख) .... ने भी स्वीकारा कि .... के कारण सबकी तबियत खराब हो गई।

(ग) गोलू ने अपनी .... डॉक्टर को बता दी।

(घ) आपके गाँव की साफ़-सफ़ाई देखकर सरकार ने इसे .... के लिए चुना है।

(ङ) अगले साल की छुट्टियों में हमें कोई नई .... देना।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) गोलू को कहाँ आना अच्छा लगता था?

(ख) दादी ने गोलू से क्या पूछा?

(ग) भीरू काका ने क्या बताया था?

(घ) डॉक्टर ने गाँववालों को क्यों बुलाया?

(ङ) डॉक्टर ने गाँववालों को कौन-सी खुशखबरी सुनाई?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) गोलू किस बात से बहुत परेशान था? विस्तार से लिखिए।

(ख) गोलू ने गाँव में साफ़-सफ़ाई के लिए कौन-से उपाय किए?

(ग) "अरे मेरे अकेले से थोड़े न कुछ होगा। वैसे भी अब बची ही कितनी ज़िंदगी है।" पाठ की इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए–

गोलू को दादा-दादी जी के पास बड़ा मज़ा आता था। पर इस बार वह उतना खुश नहीं था, जितना हर साल रहता था। उपर्युक्त पंक्तियों में रंगीन शब्द संज्ञा और गोल घेरे वाला शब्द सर्वनाम है।

पाठ में प्रयुक्त कुछ सर्वनाम शब्द लिखिए–

....

2. वार्तालाप को संवाद कहते हैं। भाषा के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करना संवाद है। संवाद दो या अधिक व्यक्तियों के बीच होता है, जैसे–दो दोस्तों के बीच संवाद।

मोहन – ये लोग पानी व्यर्थ गिरा रहे हैं।

अर्जुन – हाँ, तुमने सही कहा। ये लोग बेवजह पानी खर्च कर रहे हैं।

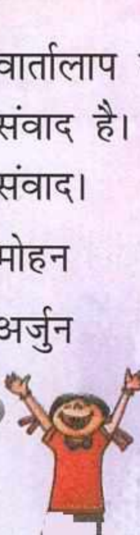

मोहन – मेरी समझ में यह नहीं आता कि जब इन्हें पानी की ज़रूरत नहीं है तो पानी क्यों फेंक रहे हैं?

अर्जुन – यह इसलिए, क्योंकि इन्हें पानी से खेलना पसंद है और ये बिना ज़रूरत पानी गिराते रहते हैं।

मोहन – लेकिन ऐसा करना अच्छा नहीं है।

अर्जुन – हाँ, तुम ठीक कहते हो।

3. पढ़िए और समझिए–

इतिहास से संबंध रखने वाला – ऐतिहासिक

जो गाना गाता हो – गायक

मिलान कीजिए–

क	ख
(क) गाँव में रहने वाला	(*i*) जलचर
(ख) जिसका दोष न हो	(*ii*) वनचर
(ग) जल में रहने वाला	(*iii*) ग्रामीण
(घ) वन में रहने वाला	(*iv*) निर्दोष

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. हमारे चारों ओर गंदगी होने से क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं?
2. आप अपने विद्यालय तथा घर के आस-पास साफ़-सफ़ाई रखने के लिए क्या-क्या करते हैं? चार-पाँच वाक्य लिखिए।

क्रियाकलाप

1. आपके अनुसार कौन-सा प्रदूषण ज़्यादा फैला हुआ है? उसकी चर्चा करके एक चार्ट बनाइए और उसे वर्ग में लगाइए।
2. स्वच्छता अभियान से संबंधित नारों को एकत्रित कर कक्षा में सुनाइए।
3. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। जिनसे प्रदूषण फैलता है, उनपर सही (✓) का निशान लगाइए तथा जिनसे प्रदूषण नहीं फैलता, उन पर गलत (✗) का निशान लगाइए–

मेरा पन्ना

गतिविधि-2

वायु प्रदूषण

जल प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण

अध्यापन-संकेत–प्रदूषण के प्रकारों के बारे में चर्चा करते हुए चार्ट या कोलाज बनवाएँ।

6 मदर टेरेसा

चिंतन-मनन

कहते हैं दुनिया में अपने लिए तो सब जीते हैं, लेकिन जो दूसरों के लिए कार्य करता है, वही महान कहलाता है। ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रेरणादायक होता है। ऐसी ही महान आत्मा थीं मदर टेरेसा। इनके बचपन का नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था। मदर टेरेसा दया, प्रेम, त्याग और निस्वार्थ भाव की प्रतिमूर्ति थीं। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दीन-दरिद्र, बीमार, लाचार और असहाय लोगों की सेवा में न्योछावर कर दिया।

मदर टेरेसा **ममता** और सेवा की **साक्षात्** मूर्ति थीं। इनका जन्म 27 अगस्त, 1910 को स्कोप्जे (सर्बिया नगर), दक्षिण यूगोस्लाविया में हुआ था। इनके पिता का नाम निकोला तथा माता का नाम ड्रानाफिल था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद 18 वर्ष की आयु में इन्होंने आइरिश धर्म परिवार लॉरेंटो में शामिल होने का निश्चय किया और अपना जीवन दीन-हीन और **अनाथों** की सेवा में समर्पित कर दिया।

सन् 1928 में ये दार्जिलिंग के लॉरेंटो कॉन्वेंट में अध्यापिका बनकर भारत आ गईं। देश के लाखों **दीन-दुखियों** की कराह ने इनके हृदय को प्रभावित कर दिया। जनवरी 1929 में इन्होंने कोलकाता के

शब्दार्थ–**ममता**–दुलार (affection), **साक्षात्**–प्रत्यक्ष (embodiment), **अनाथों**–बेसहारा (orphan), **समर्पित**–सौंपा हुआ (dedicated), **दीन-दुखियों**–गरीब-परेशान (poor & disturb)

सेंट मेरी हाई स्कूल में अध्यापन कार्य शुरू किया और बाद में इसी स्कूल में प्रधानाध्यापिका नियुक्त हो गईं।

सन् 1946 में वार्षिक अवकाश होने पर जब ये दार्जिलिंग गईं, तो इन्होंने मानव सेवा करने का संकल्प लिया। यहीं से इनके जीवन में परिवर्तन आ गया। इन्होंने पटना में नर्सिंग की ट्रेनिंग ली और तभी से अपना जीवन दुखियों, दरिद्रों, अपाहिजों, कोढ़ियों आदि की सेवा में समर्पित कर दिया। ये माँ बनकर अपनी ममता हर प्राणी में बाँटने लगीं। ये 'मदर टेरेसा' के नाम से संसार में मशहूर हुईं।

इन्होंने कोलकाता में अनेक शिक्षा केंद्र, कुष्ठ रोग चिकित्सा केंद्र, भोजनालय आदि की स्थापना की। प्रातः सात बजे ये घर से निकलकर झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले गरीबों तक पहुँचतीं और उनकी ज़रूरतें पूरी करतीं।

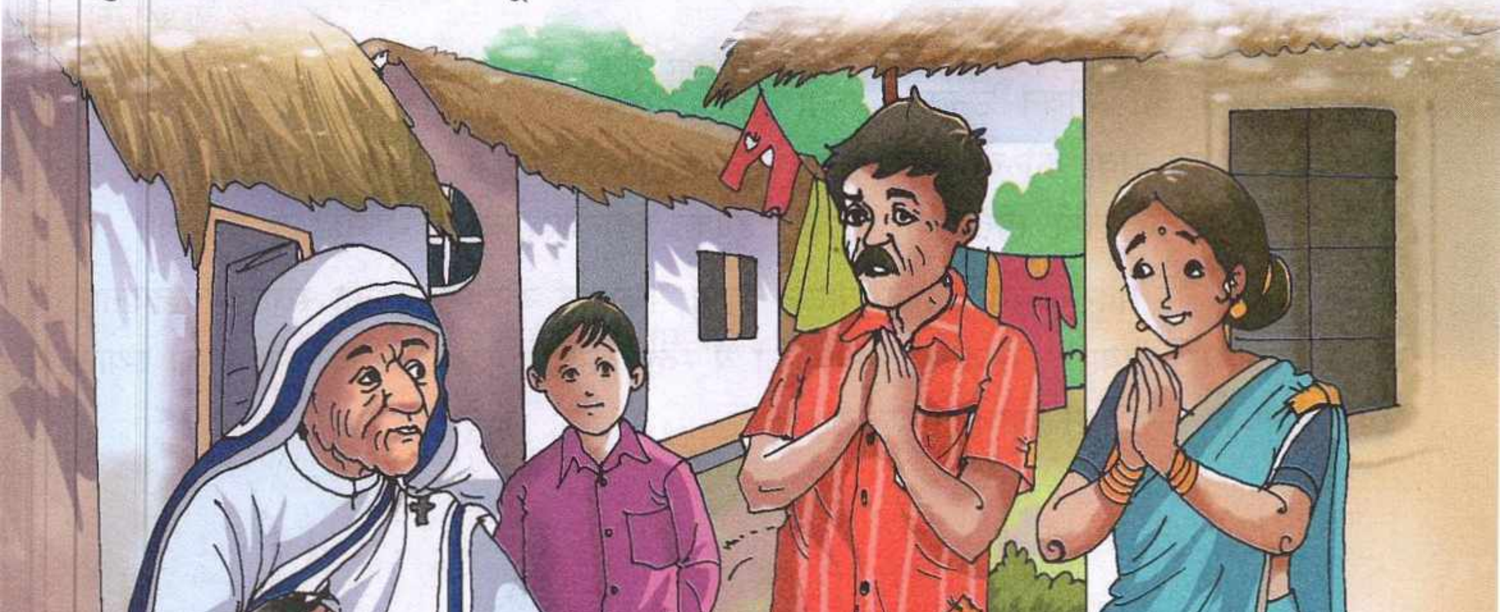

शब्दार्थ– **अध्यापन**–पढ़ाना (teach), **नियुक्त**–नौकरी पर रखना (appointed), **संकल्प**–निश्चय (resolution), **नर्सिंग**–देखभाल (care), **ट्रेनिंग**–प्रशिक्षण (training), **दरिद्रों**–गरीब (poor), **अपाहिजों**–अपंग (handicaped), **कुष्ठ**–चर्म रोग (leprosy)

सन् 1952 में इन्होंने कोलकाता में असहाय बूढ़ों को सहारा देने के लिए पहला 'निर्मल हृदय होम' स्थापित किया। मदर टेरेसा की ममता की छाया में बीमार, विकलांग तथा अनाथ व्यक्तियों को आश्रय मिला। मदर टेरेसा की दृष्टि में ऊँच-नीच व अमीर-गरीब का कोई भेद-भाव नहीं था।

इनकी सेवाओं का जनता द्वारा सम्मान किया गया। इन्हें पोप जॉन पॉल द्वारा शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। भारत सरकार ने इनके सेवा कार्यों से प्रभावित होकर इन्हें सन् 1962 में पद्मश्री की उपाधि भी दी। 19 दिसंबर, 1979 को मानव कल्याण कार्यों के लिए इन्हें नोबेल पुरस्कार से समानित किया गया। सन् 1980 में भारत सरकार ने इन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित किया। नवंबर 1983 में भारत भ्रमण के अवसर पर महारानी एलिजाबेथ ने मदर टेरेसा को भारत में ही 'ऑर्डर ऑफ़ मेरिट' की उपाधि दी।

मदर टेरेसा का जीवन उनका अपना नहीं, बल्कि दूसरों की सेवा में समर्पित था। दीन-दुखियों की सेवा को वे भगवान की सेवा समझती थीं। 87 साल की उम्र में भी वे गरीबों की सेवा में लगी रहती थीं, लेकिन उनका स्वास्थ्य अब साथ नहीं दे रहा था।

सन् 1996 में मदर टेरेसा को हृदयाघात हुआ, जिसके बाद से इनका स्वास्थ्य लगातार खराब होता चला गया। 5 सितंबर, 1997 को ये स्वर्ग सिधार गईं। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे पूरा करना मुश्किल है।

शब्दार्थ– **असहाय**–बेसहारा (helpless), **आश्रय**–सहारा (help), **सर्वोच्च**–सबसे बड़ा (supreme), **सम्मान**–आदर (honour), **स्वर्ग सिधार**–मृत्यु (death), **रिक्त**–खाली (blank)

जीवन-सूत्र

- परोपकार सबसे बड़ा धर्म है। यह मनुष्य को महान बनाता है। कोई गलती न करना मनुष्य के बस की बात नहीं, लेकिन अपनी त्रुटियों और गलतियों से सीख ग्रहण कर आगे बढ़ना बुद्धिमानी है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

साक्षात्	समर्पित	निश्चय	नियुक्त	हृदय
वार्षिक	नर्सिंग	चिकित्सा केंद्र	पद्मश्री	सम्मानित

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) मदर टेरेसा का बचपन का नाम बताइए।

(ख) मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ग) मदर टेरेसा ने कौन-से विद्यालय से अध्यापन कार्य आरंभ किया?

(घ) मदर टेरेसा का निधन कब हुआ?

लिखित

1. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

नर्सिंग   सेवा   नोबेल पुरस्कार   ममता   निर्मल हृदय होम

(क) मदर टेरेसा .... और .... की साक्षात् मूर्ति थीं।

(ख) इन्होंने पटना में .... की ट्रेनिंग ली।

(ग) इन्होंने कोलकाता में बूढ़ों को सहारा देने के लिए पहला .... स्थापित किया।

(घ) इन्हें .... से समानित किया गया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 18 वर्ष की आयु में मदर टेरेसा ने क्या निश्चय किया था?

(ख) मदर टेरेसा के माता-पिता का नाम लिखिए।

(ग) सन् 1946 में इन्होंने किस बात का संकल्प लिया था?

(घ) मदर टेरेसा ने कोलकाता में किन-किन केंद्रों की स्थापना की थी?

(ङ) मदर टेरेसा को कौन-कौन-सी उपाधियों से सम्मानित किया गया था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) मदर टेरेसा किन कारणों से दुनिया में पहचानी गईं?

(ख) 'मदर टेरेसा का जीवन उनका अपना नहीं था'। इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों से विशेषण बनाइए–

साहस	....	विश्वास	....
शांति	....	शिक्षा	....

2. नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग? लिखिए–

(क) गरीब –		(ख) बूढ़ा – ....
(ग) प्रधानाध्यापिका –		(घ) माँ – ....
(ङ) मानव –		(च) स्कूल – ....

3. निम्नलिखित वाक्यों में भाववाचक संज्ञा शब्दों को पहचानकर लिखिए–

(क) मदर टेरेसा ममता की मूर्ति थीं। ....

(ख) मदर टेरेसा ने अपना जीवन निसहाय जनों की सेवा में लगा दिया। ....

(ग) मदर टेरेसा बहुत संवेदनशील थीं। ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. मदर टेरेसा ने समाज सेवा की एक अलग मिसाल समाज के सामने प्रस्तुत की है। सोचिए और बताइए कि ऐसा करने के लिए उन्होंने अपने जीवन में किस तरह के त्याग किए होंगे?
2. आप एक आदर्श विद्यार्थी के तौर पर समाज-सेवा में किस तरह योगदान दे सकते हैं?

क्रियाकलाप

- संकेत बिंदुओं के आधार पर एक कविता या कहानी लिखिए–

संकेत बिंदु : माँ, ममता, दुलार, लोरी, नहलाना, खिलाना, कहानी, प्यारी, सुंदर।

....

....

....

....

....

....

....

....

गतिविधि-3

अध्यापन-संकेत—भारत रत्न पुरस्कार विजेता तथा नोबेल पुरस्कार विजेताओं के चित्र लगवाकर उनके बारे में चार-चार वाक्य लिखवाए जाएँ।

स[illegible]वाणी

1. "दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करें न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।।"

अर्थ–जीवन में सुख और दुख दोनों आते हैं। दुख के दिनों में सभी भगवान को याद कर लेते हैं। लेकिन सुख के समय में भगवान को कोई याद नहीं करता। यदि सुख में भी भगवान को याद किया जाए तो दुख कभी आएगा ही नहीं।

2. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काकै लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपणो, गोविंद दियो बताय।।

अर्थ–गुरु और भगवान दोनों सामने खड़े हों तो हमें गुरु की शरण में जाना है, क्योंकि भगवान का परिचय तो गुरु के कारण ही हुआ है। भगवान से श्रेष्ठ गुरु है। *–कबीरदास*

---

1. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियत न नीर।
परमारथ के कारने, संतन धरा सरीर।।

अर्थ–पेड़ अपने फल खुद कभी नहीं खाते। नदियाँ भी अपना पानी खुद कभी नहीं पीतीं। इसी तरह संतों का शरीर दूसरों के काम आता है। वे अपने लिए कुछ नहीं करते। हमेशा दूसरों पर उपकार करते हैं।

2. बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिये तराजू तौलि कैं, तब मुख बाहर आनि।।

अर्थ–वाणी अनमोल होती है। उसे सोच-समझकर बोलना चाहिए। कोई बात मुँह से निकालने से पहले सौ बार सोचना चाहिए। *–रहीम*

काली क्यों?

चिंतन-मनन

जीवन में मीठी वाणी का बड़ा ही महत्व होता है जसके पास मीठी वाणी नहीं, उस इनसान के पास सब कुछ होते हुए भी, कुछ भी नहीं होता। मीठी णी से वह अपने परिवार, रिश्तेदारों, दोस्तों के साथ अच्छा संबंध स्थापित कर सकता है। जीवन में सप हो सकता है।

कागा काको धन ह कोयल काको देत
मीठा शब्द सुनाय के ग अपना कर लेत।

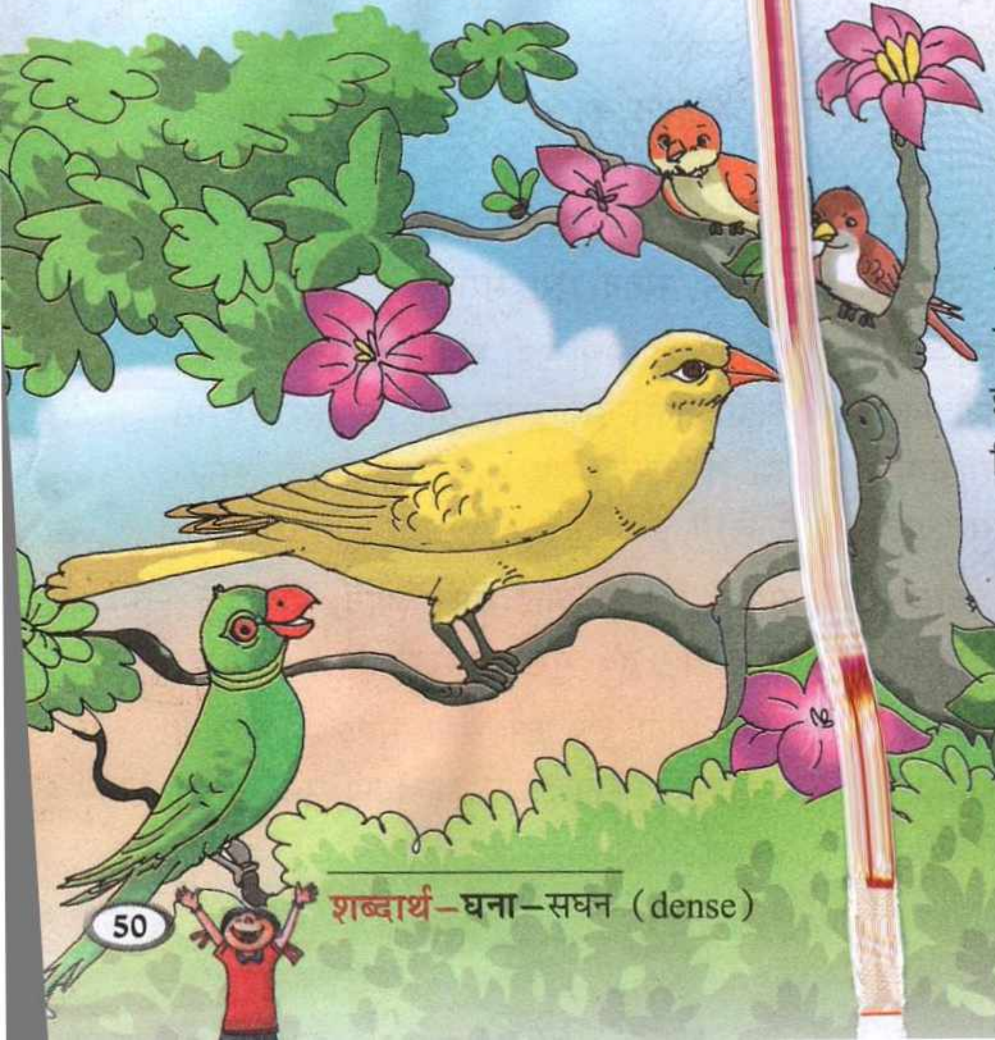

बहुत समय पहले एक नदी के किनारे घना जंगल था। जंगल में तरह-तरह की रंग-बिरंगी चिड़ियाँ थीं। सारा जंगल इन चिड़ियों की चहचहाहट से गूँजता रहता था। इन छोटी-बड़ी, मोटी-पतली चिड़ियों की सरदार थी–एक सुनहरी चिड़िया। इस चिड़िया का रंग सोने जैसा था, मानो कोई स्वर्ण परी हो। जब वह नीले आसमान

शब्दार्थ–घना–सघन (dense)

में अपने सुनहरे पंख फैलाकर उड़ती थी, तब जंगल के सभी छोटे-बड़े जानवर मुग्ध होकर उसे देखते रह जाते थे। सभी पशु-पक्षी उसको चाहते थे। उसके रूप-रंग और चमकीली आँखों पर सबको गर्व था। खतरनाक-से-खतरनाक जानवर भी उसके साथ अच्छा बरताव करते थे। आखिर वह जंगल की शान जो थी।

सब जानवर उसे इतना प्यार करते थे कि उसकी गलतियों पर भी उसको कभी कोई नहीं टोकता था। इतना ज़्यादा लाड़-प्यार पाकर सुनहरी चिड़िया अपने-आपको जंगल की रानी समझने लगी थी। सब उसे प्यार से सोनल कहकर पुकारते थे। सोनल किसी से सीधे मुँह बात न करती थी। जब चाहे तब नीले गगन में मनमानी करती हुई लंबी उड़ान भरा करती थी।

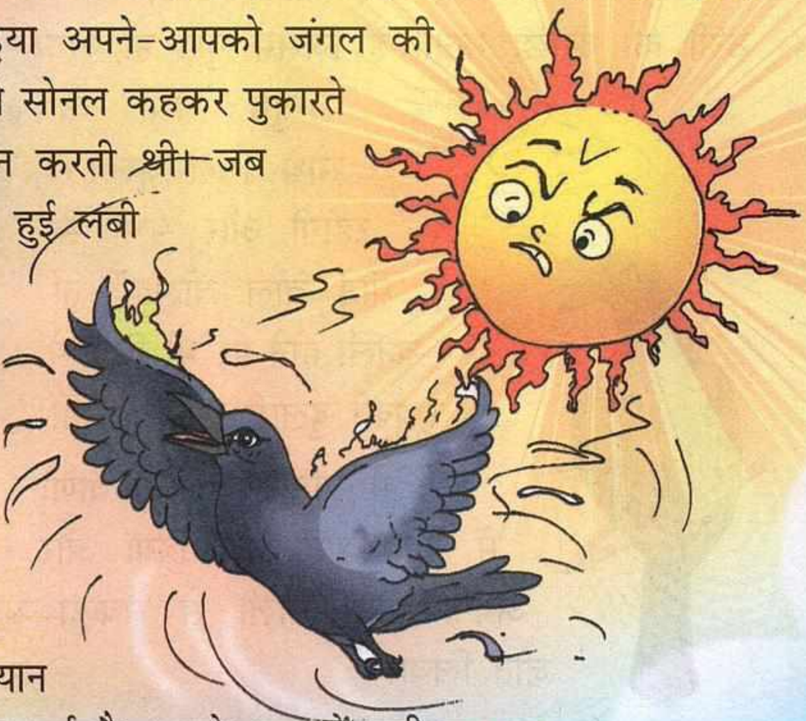

अपनी सोने जैसी दमकती काया की सुंदरता के घमंड में डूबी वह एक बार नभ में बहुत ऊँची चली गई। दूर से उसके सुनहरे पंख आकाश में फैली किरणों के समान लग रहे थे।

उड़ते-उड़ते उसे इस बात का ध्यान ही न रहा कि वह बहुत ऊँचाई पर आ गई है। उसके मन में यही लालसा थी-ऊँचा उड़ने की, सबसे ऊँचा उड़ने की।

अचानक सोनल ज़ोर से चीख उठी-"उई माँ! बचाओ...बचाओ।" सूरज की गरमी ने सोनल को जला डाला। उसका सुनहरा शरीर झुलस गया। उसके सोने

शब्दार्थ-मुग्ध-मोहित (fascinated), **बरताव**-व्यवहार (behaviour), **गगन**-आकाश, नभ (sky), **काया**-शरीर (body), **लालसा**-तीव्र इच्छा (desire), **झुलस**-जलना (to burn)

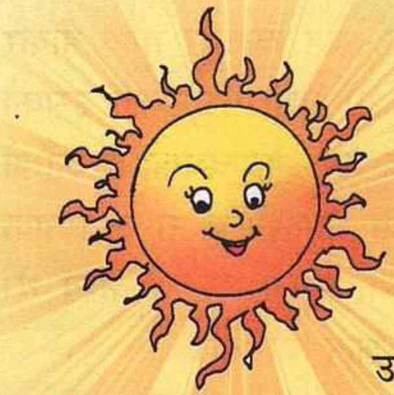

जैसे पंख काले पड़ गए। रोती, चीखती-चिल्लाती, दर्द से छटपटाती वह नीचे गिर पड़ी।

गिरते-पड़ते वह बूढ़े बरगद बाबा की टहनियों में फँस गई। बूढ़े बाबा ने उसे प्यार से सहलाया। बाबा ने थोड़े दिन उसकी खूब सेवा की जिससे वह थोड़ी-थोड़ी ठीक हो गई। पर सोनल उदास रहने लगी, क्योंकि उसका सुनहरा रंग काला पड़ गया था।

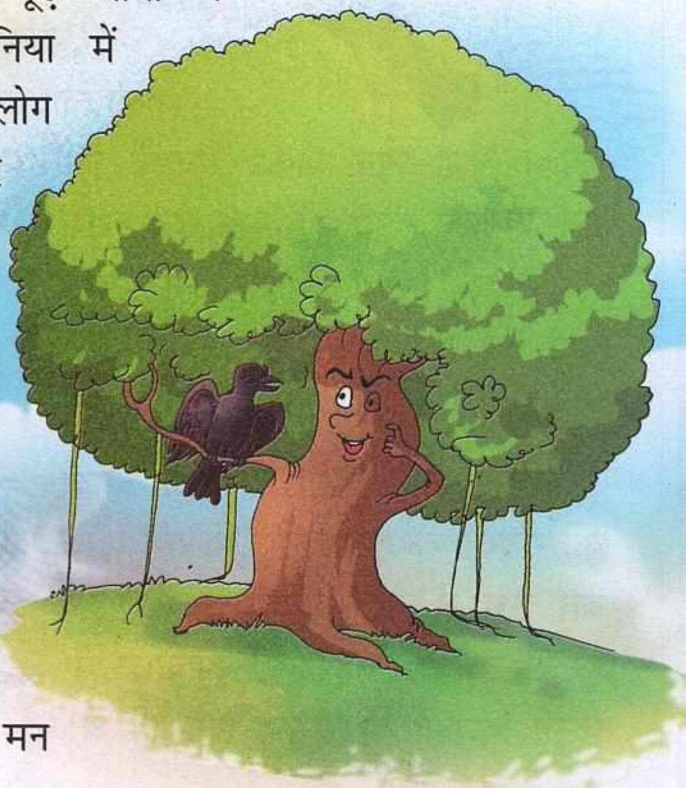

उसे गुमसुम देखकर बूढ़े बाबा ने उसे समझाया कि इस दुनिया में रूप-रंग का कोई महत्व नहीं है। लोग उसी को अच्छा मानते हैं जिसमें गुण हों अगर तुम सभी के साथ मिल-जुलकर रहोगी और सभी से मीठे बोल बोलोगी तो काली होने पर भी फिर से सबकी दुलारी बन जाओगी।

तभी से सोनल ने मीठी वाणी में गाना शुरू कर दिया और अपनी मीठी बोली से सबका मन जीत लिया।

सभी उसे कोयल के नाम से पुकारने लगे। धीरे-धीरे सभी सोनल चिड़िया को भूल गए और कोयल के गुण गाने लगे।

शब्दार्थ–**दुलारी**–प्यारी (lovable), **वाणी**–बोली (language)

जीवन-सूत्र

- नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण हैं। शेष सब नाममात्र के भूषण हैं।
- जो सबके दिल को खुश कर देने वाली वाणी बोलता है, उसके पास गरीबी कभी नहीं आती।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

रंग-बिरंगी	चिड़ियाँ	चहचहाहट	चमकीली
गर्व	गलतियाँ	मुँह	किरणों
छटपटाती	क्योंकि	महत्व	वाणी

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) चिड़ियों की सरदार कौन थी?

(ख) चिड़िया स्वयं को जंगल की रानी क्यों मानने लगी थी?

(ग) जंगल के सभी पशु-पक्षी सुनहरी चिड़िया को क्या कहकर बुलाते थे?

(घ) सोनल नीले आकाश में ऊँचा किस कारण से उड़ना चाहती थी?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

चहचहाहट   सोनल   सुनहरा   रंग-बिरंगी   छटपटाती   चमकीली

(क) जंगल में तरह-तरह की .... चिड़ियाँ थीं।

(ख) सारा जंगल चिड़ियों की .... से गूँजता था।

(ग) उसके रूप-रंग और .... आँखों पर सबको गर्व था।

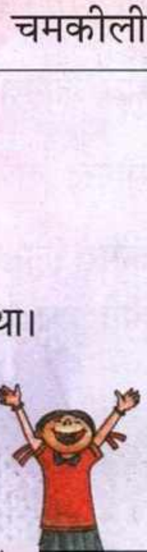

(घ) .... किसी से सीधे मुँह बात न करती थी।

(ङ) सूरज की गरमी से सोनल का .... शरीर झुलस गया।

(च) रोती, चीखती-चिल्लाती, दर्द से .... वह नीचे गिर पड़ी।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) चिड़िया की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) सोनल चिड़िया ज़्यादा लाड़-प्यार पाकर अपने आपको क्या समझने लगी थी?

(ग) सोनल का सुनहरा शरीर कैसे झुलस गया था?

(घ) सोनल उदास क्यों रहने लगी थी?

(ङ) बूढ़े बाबा ने सोनल को क्या सीख दी?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए-

(क) सुनहरी चिड़िया सोनल से कोयल कैसे बनी?

(ख) सोनल ने मीठी वाणी में गाना क्यों शुरू किया? इससे उसे क्या लाभ हुआ?
(मूल्यपरक प्रश्न)

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए-

सुनहरी चिड़िया अपने सुनहरे पंख फैलाकर **उड़ती थी**।

सब जानवर उसे प्यार **करते थे**।

सोनल लंबी उड़ान भरा **करती थी**।

ऊपर लिखे वाक्यों में **उड़ती थी**, **करते थे**, **करती थी** आदि शब्दों से किसी काम के होने का पता चल रहा है।

जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उन्हें क्रिया शब्द कहते हैं।

निम्नलिखित चित्रों को देखकर उचित क्रिया शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रवि गाना .... रहा है।

(ख) प्रियंका खाना .... रही है।

(ग) अमन पानी .... रहा है।

(घ) माँ खाना .... रही हैं।

(ङ) पिता जी अखबार .... रहे हैं।

2. नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

विश्व	संसार	........जगत......	हँसी	कहकहा	....
पथ	रास्ता	........मार्ग.......	वायु	हवा	....
पानी	जल	....	बच्चा	बालक	....
आकाश	आसमान	....	नेत्र	आँख	....

3. पढ़िए और समझिए–

रंग-बिरंगी चिड़ियाँ–इसमें रंग-बिरंगी शब्द विशेषण हैं और चिड़ियाँ शब्द विशेष्य है। जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं तथा विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

नीचे कुछ विशेषण-विशेष्य दिए गए हैं, उन्हें दिए गए स्थान पर लिखिए–

घना जंगल, मोटी-पतली चिड़ियाँ, सुनहरी चिड़िया, स्वर्ण परी, नीला आसमान, सुनहरे पंख, छोटे-बड़े जानवर, चमकीली आँखें, बूढ़े बाबा, दमकती काया

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि कोई आपके बाह्य गुणों (रंग-रूप) को देखकर आपसे मित्रता का हाथ बढ़ाए तो आप कैसा अनुभव करेंगे? क्या आपके अनुसार ऐसा व्यवहार उचित है? अपने विचार लिखिए।

2. क्या आपने कभी गरीबों और बेसहारों की मदद की है? कैसे? लिखिए।

क्रियाकलाप

1. आपको विभिन्न पशु-पक्षियों में से सबसे प्रिय कौन-सा लगता है? उसके विषय में पाँच वाक्य लिखिए।
2. मीठी वाणी का महत्व बताते हुए कोई दो दोहे कंठस्थ कीजिए। कक्षा में सस्वर वाचन करते हुए उनके अर्थ भी समझाइए।
3. दर्शाए गए चित्र में कोयल को ढूँढ़िए और साथ ही अन्य प्राणियों के नामों का भी पता लगाइए–

8 गांधी जी की हिंसा

चिंतन-मनन

मोहन दास करमचंद गांधी, जिन्हें हम राष्ट्रपिता के नाम से जानते हैं। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने बिना अस्त्र-शस्त्र उठाए अंग्रेज़ों को झुका दिया और भारत को आज़ादी दिलवाई। हमें भी उन्हीं की तरह सत्य, प्रेम, अहिंसा, दया और क्षमा जैसे गुणों को धारण करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्ष करते रहना चाहिए।

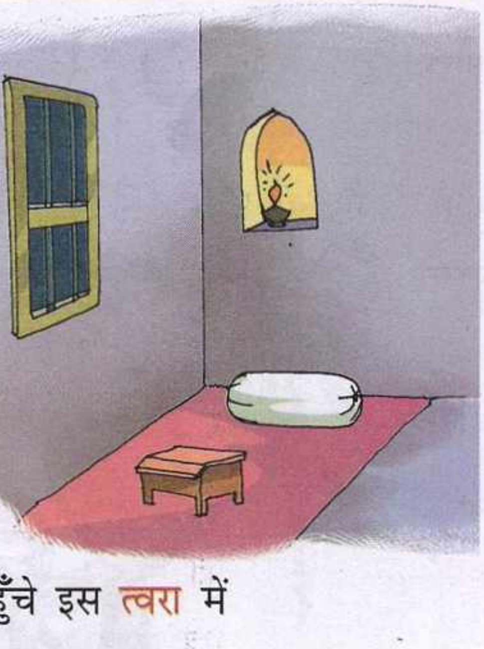

एक बार की बात, गए जब
गांधी जी के पास जवाहरलाल।
घड़ी थी रात की,
कुटिया के कोने में नन्हा दीप था।
अँधियारे में दिखी न लाठी
पंडित जी को गांधी जी के हाथ की।

और पास उनके पहुँचे इस त्वरा में
वे बेचारे लाठी से टकरा गए।
बहुत नहीं, लेकिन थोड़े, लड़खड़ाकर
कुछ गुस्से में आए, कुछ घबरा गए।

शब्दार्थ–**कुटिया**–झोपड़ी (hut), **नन्हा**–सबसे छोटा (small), **अँधियारे**–अँधेरा (darkness), **त्वरा**–तेज़ी, शीघ्रता (swift, hurry)

थोड़े कुछ झल्लाकर बोले–'आप तो
प्रेम-अहिंसा के हामी हैं, फिर भला
पाँच हाथ का इतना मोटा लट्ठ यह
रहता है किसलिए बगल ही में डला?'

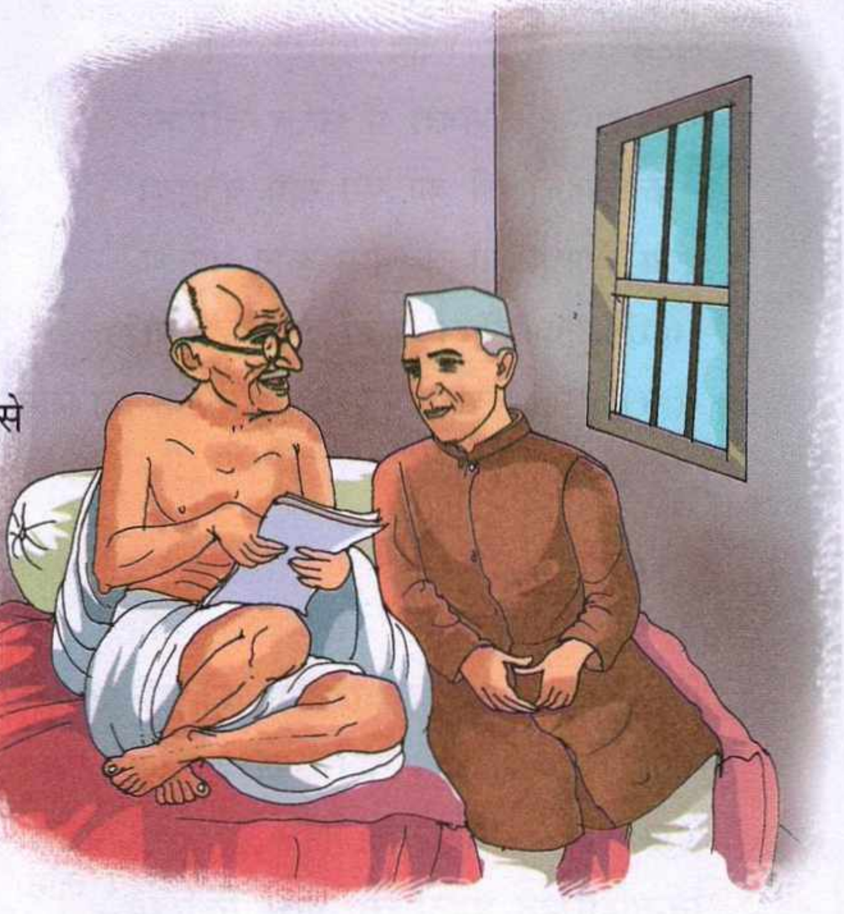

गांधी जी मुसकरा उठे इस क्रोध पर,
बोले–'तुम्हीं बताओ तुम से ऊधमी
लड़कों की क्या आसपास मेरे कमी!
उन्हें ठीक रख सकूँ, इसी के ध्यान से
रखता हूँ मैं लंबी-मोटी यह छड़ी।'

सुनकर हँसे जवाहर, बापू भी हँसे,
दमक उठी दोनों की निर्मल हँसी से
अंधकार से भरी रात की वह घड़ी।

–भवानी प्रसाद मिश्र

शब्दार्थ–हामी–समर्थन (support), **लट्ठ**–लाठी (stick), **ऊधमी**–उधम मचाने वाला (mischievous), **दमक**–चमक (shine), **निर्मल**–पवित्र (pure)

जीवन-सूत्र

- पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अंत:करण को उज्ज्वल करती हैं।

–महात्मा गांधी

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

कुटिया	नन्हा	अँधियारा	अहिंसा	त्वरा
लट्ठ	ध्यान	निर्मल	पंडित	अंधकार

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) गांधी जी का पूरा नाम बताइए।

(ख) गांधी जी के पास कौन गए थे?

(ग) नन्हा दीपक कहाँ जल रहा था?

(घ) हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री का नाम क्या है?

लिखित

1. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को उचित शब्दों से भरिए–

(क) एक बार की बात, गए जब गांधी जी के पास ....।

(ख) और पास उनके पहुँचे इस त्वरा में, वे बेचारे .... टकरा गए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जवाहरलाल जी को लाठी क्यों नहीं दिखाई दी?

(ख) गांधी जी की लाठी से टकराने के बाद जवाहरलाल जी की क्या प्रतिक्रिया हुई?

(ग) उन्होंने गांधी जी से क्या पूछा?

(घ) गांधी जी ने जवाहरलाल नेहरू जी को लाठी रखने का क्या कारण बताया?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'गांधी जी मुसकरा उठे इस क्रोध पर' इस काव्य पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) अंधकार से भरी रात कैसे दमक उठी? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य बनाकर लिखिए–

घड़ी (समय बताने वाली घड़ी) ....

घड़ी (एक पल) ....

हंस (एक पक्षी) ....

हँस (हँसना) ....

2. तुक मिलाते हुए शब्द बनाइए–

छड़ी, घड़ी, ...

3. समान अर्थ वाले शब्दों में एक ही रंग भरकर जोड़े बनाइए–

गुस्सा	निशा
रात	लट्ठ
चश्मा	दीप
दीया	क्रोध
डंडा	अँधेरा
तम	ऐनक

4. कविता में से संज्ञा शब्द छाँटकर तालिका पूरी कीजिए–

व्यक्ति	वस्तु	भाव
....	....	....
....	....	....

5. अर्थ जानकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) गांधी जी जवाहरलाल जी की .... देख रहे हैं। (ओर/और)

गांधी जी .... जवाहरलाल जी बात कर रहे हैं।

(ख) गांधी जी .... की ओर चले गए। (बहार/बाहर)

गांधी जी के आश्रम में .... आ गई।

(ग) जवाहरलाल जी ने बाज़ार से कुछ .... खरीदा। (समान/सामान)

गांधी जी जवाहरलाल जी के विचार एक .... थे।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. गांधी जी के जीवन से हम किन गुणों को सीखकर अपने जीवन को सद्मार्ग पर चला सकते हैं? सोचिए और बताइए।
2. 'स्वतंत्रता' बहुत महत्वपूर्ण बात है, कैसे? अगर आपको एक दिन के लिए कमरे में बंद कर दिया जाए, तो आपको कैसा लगेगा?

क्रियाकलाप

1. पहली पंक्ति को ध्यान से पढ़कर उसी के आधार पर दूसरी पंक्ति स्वयं अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाकर तुकबंदी करते हुए लिखिए–

बापू जी के तीन बंदर	नेहरू जी का गुलाब महकता
....	....फबता।
बापू जी का चरखा चलता	नेहरू जी की कलम में जादू
सूत ....।	....।
अहिंसा के वे हैं पुजारी	जब तक सूरज चाँद रहेगा
....।	तब तक नेहरू जी ....।

2. गांधी व नेहरू जी से जुड़ी हुई चीज़ों को पहचानिए और लिखिए–

....

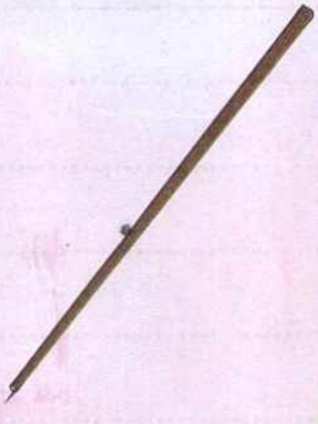

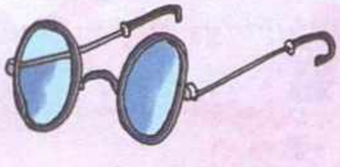

....

....

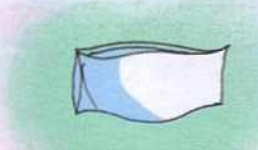

....

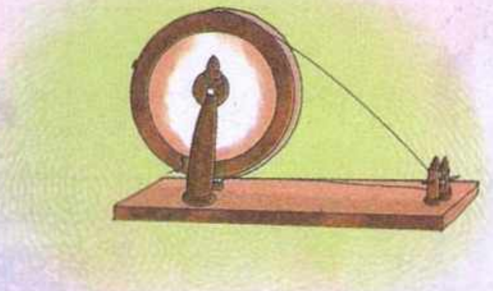

....

....

गतिविधि-4

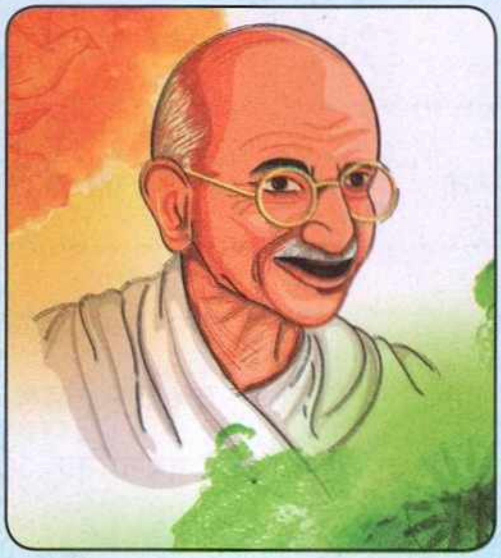

अध्यापन-संकेत—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के जन्म, जन्मस्थान और माता-पिता के बारे में वाक्य लिखवाएँ।

अतिरिक्त पठन

अच्छे बच्चे

सुबह-सुबह जल्दी उठ जाते,
माता-पिता को शीश नवाते,
गुरुओं का जो मान बढ़ाते,
अच्छे बच्चे वही कहलाते।

हर दिन पाठशाला को जाते,
पढ़ने से जी न चुराते,
परीक्षा में जो अव्वल आते,
अच्छे बच्चे वही कहलाते।

मुश्किलों से न जो घबराते,
हरदम आगे बढ़ते जाते,
काम सभी के जो आते,
अच्छे बच्चे वही कहलाते।

कभी किसी से न जो लड़ते,
सबसे मीठी बातें करते,
प्यार सभी का जो पाते,
अच्छे बच्चे वही कहलाते।

—कवि प्रीत

9 चतुराई और विनम्रता

चिंतन-मनन

हर प्राणी को अहंकार का त्याग करना चाहिए। अहंकार से ही शत्रु बन जाते हैं। मधुर वाणी से स्वयं तथा दूसरों को भी प्रसन्नता मिलती है।

समुद्र के किनारे एक टिटहरी अपने पति के साथ रहती थी। जब उसके अंडे देने का समय आया तो उसने अपने पति से कहा, "आप कोई सुरक्षित स्थान खोजिए, जहाँ पर मैं अंडे दे सकूँ।"

घमंडी पति ने कहा, "तुम यहीं समुद्र के किनारे अंडे दो। समुद्र में हमारे अंडे बहा ले जाने की हिम्मत नहीं है।" यह बात समुद्र ने सुन ली। उसने सोचा, "इस छोटे से पक्षी की यह हिम्मत कि वह मुझे कुछ समझता ही नहीं।" उसने टिटहरी के पति को सबक सिखाने का फ़ैसला किया।

जब टिटहरी ने अंडे दिए तो समुद्र अपने ज्वार के साथ उन्हें बहा ले गया। टिटहरी और

शब्दार्थ– **टिटहरी**–पानी के किनारे रहने वाली चिड़िया (erolia minutilla), **सुरक्षित**–सुरक्षा की गई (safe), **हिम्मत**–साहस (courage), **सबक**–सीख (lesson), **ज्वार**–प्रवाह (high tide)

उसके पति ने लौटने पर देखा कि उनके अंडे नहीं है। टिटहरी ने अपने पति से कहा, "देख लिया आपने, आपके **घमंड** के कारण हमारे अंडे पता नहीं कहाँ गायब हो गए? लगता है समुद्र उन्हें ले गया।"

"मैं मूर्ख नहीं। तुम देखना, मैं इस **दुष्ट** समुद्र से बदला लूँगा। अपनी चोंच से पानी पीकर इसे सुखा दूँगा।" पति ने घमंड से कहा।

टिटहरी ने समझदारी से अपने पति को कहा, "आप अकेले ही इस समुद्र से बदला मत लो। छोटी-सी चोंच से इतना बड़ा **विशाल** समुद्र सुखाया नहीं जा सकता। अगर बदला लेना ही है तो अपने दूसरे पक्षियों को भी साथ में ले लो। सच ही कहा है कि **तिनकों** को मिलाकर ही रस्सी बनती है, जिससे हाथी भी बाँधे जा सकते हैं।"

टिटहरी की बात को सही समझते हुए पति ने बगुले, सारस, मोर आदि पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा, "मित्रो! इस दुष्ट समुद्र ने मेरे अंडे चुरा लिए हैं इसलिए मैं इसे सबक सिखाना चाहता हूँ। इसे सुखाने को कोई उपाय बताइए।"

सभी पक्षियों ने आपस में चर्चा की। मोर ने कहा, "हम पक्षियों में समुद्र का पानी सुखाने की शक्ति नहीं है। हमें अपने राजा गरुड़ के पास जाकर उनसे मदद माँगनी चाहिए।"

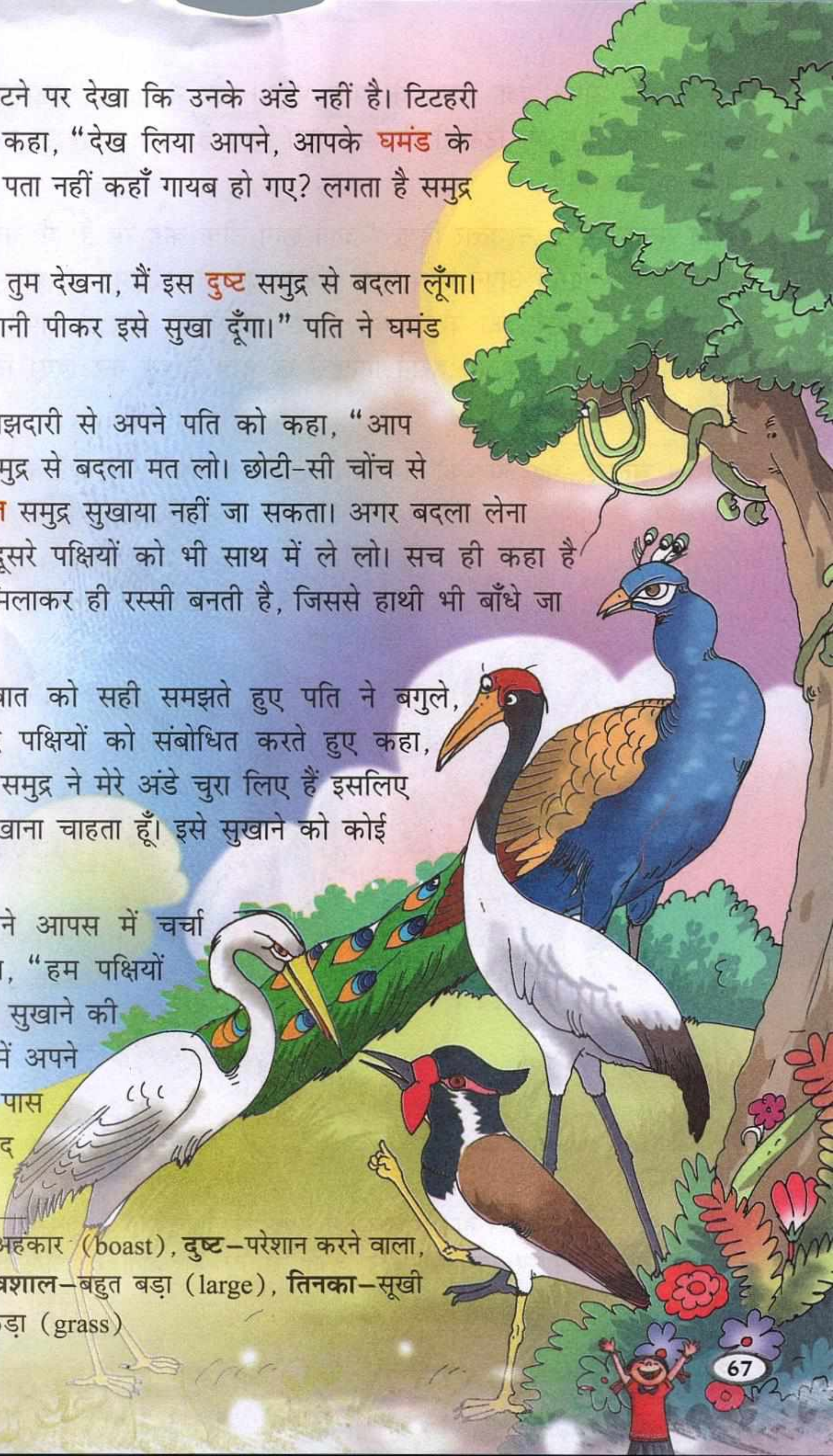

शब्दार्थ– **घमंड**–अहंकार (boast), **दुष्ट**–परेशान करने वाला, निर्दय (cruel), **विशाल**–बहुत बड़ा (large), **तिनका**–सूखी घास आदि का टुकड़ा (grass)

सभी पक्षी अपने राजा गरुड़ के पास पहुँचे। मोर ने कहा, "महाराज, इस दुष्ट समुद्र ने आपके होते हुए भी टिटहरी के अंडे चुरा लिए हैं। इस प्रकार तो पक्षी कुल बिलकुल समाप्त हो जाएगा।"

बात सुनकर गरुड़ ने उत्तर दिया, "आप लोग ठीक कह रहे हैं। मैं अभी जाकर समुद्र से बात करता हूँ।" गरुड़ अपने साथ कुछ पक्षियों को लेकर समुद्र के पास गए। उसने चतुराई से समुद्र की विशालता की प्रशंसा की, फिर टिटहरी की ओर से माफ़ी माँगी। समुद्र गरुड़ की नम्रता से प्रभावित हुआ। उसने टिटहरी के अंडे वापस कर दिए। टिटहरी खुशी-खुशी अपने अंडे लेकर चली गई।

शब्दार्थ– चतुराई–चतुर होने की अवस्था (cleverly), **नम्रता**–नम्र होने का भाव (politeness)

जीवन-सूत्र

- हम महानता के करीब होते हैं जब हम नम्रता में महान होते हैं। *–रवींद्रनाथ ठाकुर*
- अभिमान से मनुष्य परमात्मा और जनता से दूर हो जाता है और नम्रता से निकटतम। *–बेंजामिन फ्रेंकलिन*

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

टिटहरी	सुरक्षित	समुद्र	हिम्मत	घमंड
रस्सी	चर्चा	समाप्त	गरुड़	प्रशंसा

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) टिटहरी कहाँ रहती थी?

(ख) उसका पति कैसा था?

(ग) अंडों का क्या हुआ?

(घ) तिनकों को मिलाकर क्या बनता है?

(ङ) सभी पक्षी किसके पास गए?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) समुद्र के किनारे एक .... अपने पति के साथ रहती थी।

(ख) समुद्र में हमारे अंडे बहा ले जाने की .... नहीं है।

(ग) मैं इस .... समुद्र से बदला लूँगा।

(घ) सभी पक्षी अपने राजा .... के पास पहुँचे।

(ङ) समुद्र गरुड़ की .... से प्रभावित हुआ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) टिटहरी ने अपने पति से क्या कहा?

(ख) समुद्र ने क्या फ़ैसला किया?

(ग) सभी पक्षियों ने आपस में चर्चा क्यों की?

(घ) मोर ने गरुड़ से क्या कहा?

(ङ) समुद्र किससे प्रभावित हुआ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) गायब अंडों को खोजने के लिए टिटहरी ने पहले क्या योजना बनाई? उसमें बदलाव क्यों किया?

(ख) पक्षीराज गरुड़ ने समुद्र की प्रशंसा क्यों की? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए–

मेरे घर में चूहा है।

मेरे घर में चुहिया है।

'चूहा-चुहिया' की तरह नीचे लिखे शब्दों के भी रूप बदलकर लिखिए–

पति	–	....	चिड़िया	–	....
हाथी	–	....	मोर	–	....
राजा	–	....	महाराज	–	....

2. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

दुष्ट	सभी	एक	अपने	सुरक्षित

(क) .... टिटहरी (ख) .... स्थान

(ग) .... समुद्र (घ) .... पक्षी

(ङ) .... अंडे

ध्यान दीजिए–बच्चो, जो भी शब्द आपने रिक्त स्थान पर लिखे, वे विशेषता बताने वाले शब्द हैं।

3. यह भी जानिए–

समुद्र – सागर, जलधि, रत्नाकर

पानी – जल, नीर, अंबु

पक्षी – पंछी, खग, विहग

राजा – नृप, भूपति, नरेश

चतुर – प्रवीण, निपुण, कुशल

अब आप निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

घमंड – ....

विशाल – ....

4. निम्नलिखित शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) समुद्र – ....

(ख) विशाल – ....

(ग) शक्ति – ....

(घ) माफ़ी – ....

(ङ) खुशी – ....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि राजा गरुड़ समुद्र के पास न जाते तो क्या होता? बताइए।
2. इस पाठ से आपको क्या सीख मिलती है? आप कैसा व्यवहार अपनाना चाहेंगे और क्यों?

क्रियाकलाप

1. नीचे कुछ पक्षियों के चित्र दिए गए हैं। इन्हें पहचानकर इनका नाम लिखिए और इनके रहने के स्थान का पता लगाइए–

....

2. जंगल में रहने वाले जंतुओं के नाम लिखिए और उनमें से किन्हीं दो की एक-एक विशेषताएँ बताइए–

....

....

3. बूझो तो जानें!

– टेढ़ी-मेढ़ी गली थी,
रस से पूरी भरी थी।

....

– गोल, सफ़ेद जैसे अंडा,
खाने में मीठा, कुछ ठंडा।
फटे दूध का बड़ा कमाल,
तुरंत पचता प्यारे लाल।

....

मीरा के पद

बसो मोरे नैनन में नंदलाल

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुन तिलक दिए भाल।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर सुधा-रस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
क्षुद्र घटिका कटि-कटि सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल॥

अध्यापन-संकेत—मीराबाई की जीवनी पर चर्चा करें तथा उनके पदों का वर्ग में छात्रों से अभिनय सहित गायन करवाएँ।

10 नववर्ष का पर्व-पोंगल

चिंतन-मनन

उत्तर भारत के मकर संक्रांति त्योहार को ही दक्षिण भारत में पोंगल के रूप में मनाया जाता है। पोंगल विशेष रूप से किसानों का त्योहार है। इस दिन तमिलनाडुवासी बुरी रीतियों का त्याग करते हैं। यह कार्य 'पोही' कहलाता है। जिसका अर्थ है– 'जाने वालीं'। इसके द्वारा लोग बुरी चीज़ों का त्याग करते हैं और अच्छी चीज़ों को ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

'पोंगल' तमिलनाडु में मनाया जाने वाला मुख्य त्योहार है। तीन दिनों तक चलने वाला यह त्योहार अत्यंत हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन सभी नए कपड़े पहनते हैं। पोंगल के पहले दिन को 'भोंगी पोंगल' कहा जाता है। इस दिन महिलाएँ आँगन लीपती हैं और घरों को फूलों से सजाती हैं।

'भोंगी पोंगल' के दिन नदी में नहाकर भगवान इंद्र की पूजा की जाती है। लोगों का मानना है कि इंद्र देवता वर्षा के देवता हैं। जब इंद्र देवता समय पर वर्षा करेंगे, तभी खेतों में फ़सल लहराएगी। इस दिन चावल के स्वादिष्ट पकवान बनते हैं। नारियल के दूध की गुड़ वाली खीर भी बनाई जाती है।

पोंगल का दूसरा दिन 'सूर्य पोंगल' कहलाता है। इस दिन सूर्य देवता की पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि सूर्य देवता फ़सलों को उष्मा और ऊर्जा देते हैं अतः इनकी पूजा कर इन्हें धन्यवाद दिया जाता है। 'सूर्य पोंगल' के दिन चावल, ज्वार, दूध और

शब्दार्थ–त्योहार–पर्व, उत्सव (festival), **अत्यंत**– अत्यधिक (extremely), **उल्लास**–आनंद (happiness), **उष्मा**–गरमी, ताप (heat), **ऊर्जा**–शक्ति (energy),

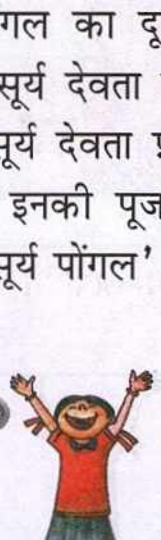

नारियल से बनी खीर सूर्य देवता को भोग में चढ़ाई जाती है। लोग रिश्तेदारों और मित्रों को पोंगल की बधाई देते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं।

पोंगल के तीसरे दिन को 'माट्टू पोंगल' कहा जाता है। यह दिन पशुओं की पूजा का दिन होता है। माना जाता है कि पशु ही जीवन के आधार हैं। ये फ़सलों की उपज में सहायता करते हैं। इनसे ही हमें दूध, दही मिल पाता है। 'माट्टू पोंगल' की एक कुरीति भी है, जिसे 'जल्लीकट्टू' कहा जाता है। इसमें बैलों एवं भैंसों को तंग कर पहले दौड़ाते हैं और फिर उन्हें काबू में लाया जाता है। यह पालतू पशुओं पर अत्याचार है। भारत सरकार के उच्चतम न्यायालय ने इसे अवैध करार देते हुए 'जल्लीकट्टू' न मनाने का आदेश दिया था।

पोंगल हर्षोल्लास के साथ दोस्ती, भाईचारे एवं पशु प्रेम का संदेश भी देता है।

शब्दार्थ–माट्टू–गाय (cow), **कुरीति**–बुरा ढंग, कुप्रथा (evil), **तंग**–परेशान करना (to harass), **भाईचारे**–भ्रातृत्व (brother hood)

जीवन-सूत्र

- त्योहार उत्साह, उमंग, राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रतीक होते हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

त्योहार	हर्ष	उल्लास	इंद्र
वर्षा	भोग	उपज	अत्यंत

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) पोंगल किस राज्य का पर्व है?

(ख) पोंगल का पहला दिन क्या कहलाता है?

(ग) वर्षा के देवता कौन हैं?

लिखित

1. जोड़कर लिखिए–

(क) भोंगी पोंगल के दिन नदी में	पशु प्रेम का संदेश देता है।
(ख) दूसरा दिन	ऊष्मा और ऊर्जा प्रदान करते हैं।
(ग) सूर्य देवता फ़सलों को	आधार हैं।
(घ) पशु ही जीवन के	नहाकर इंद्र की पूजा की जाती है।
(ङ) पोंगल भाईचारा एवं	सूर्य पोंगल कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'भोंगी पोंगल' के दिन किस देवता की पूजा की जाती है और क्यों?

(ख) पोंगल के दूसरे दिन को क्या कहा जाता है और यह कैसे मनाया जाता है?

(ग) 'माट्टू पोंगल' के दिन दक्षिण भारत के लोग क्या करते हैं?

(घ) उच्चतम न्यायालय ने किस प्रथा पर रोक लगाई थी और क्यों?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) पर्व किस प्रकार से हमारे जीवन में आनंद लाते हैं? लिखिए।

(ख) 'जल्लीकट्टू' के बारे में आप क्या जानते हैं?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

मरन	–	......मरण......	अधार	–	....
दसरथ	–	....	साधू	–	....
नास	–	....	पुज्य	–	....
ग्यानी	–	....	इसिलिए	–	....
करम	–	....	मिठाईयाँ	–	....

2. जैसे जानवरों का 'झुंड' होता है, वैसे–

(क) चाबियों का .... होता है।

(ख) फूलों का .... होता है।

(ग) पक्षियों का .... होता है।

(घ) पेड़ों का .... होता है।

3. वचन बदलकर वाक्य दुबारा लिखिए–

(क) महिलाएँ आँगन लीपती हैं।

....

(ख) उसने अपने मित्र को पोंगल की बधाई दी।

....

(ग) ये फ़सलों की उपज में सहायता करते हैं।

....

(घ) वह मिठाई बाँटता है।

....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. त्योहार धार्मिक एवं राष्ट्रीय एकता का आधार हैं। कैसे? सोचिए और बताइए।
2. आपका पसंदीदा त्योहार कौन-सा है? वह आपको क्यों पसंद है? बताइए।

क्रियाकलाप

1. निम्नलिखित त्योहारों पर कौन-कौन से पकवान बनाए जाते हैं?

ओणम	होली	गणेश उत्सव	दीपावली	ईद	क्रिसमस

2. देश के विभिन्न हिस्सों में मनाए जाने वाले त्योहारों की एक सूची बनाइए। उनकी विशेषताओं पर चर्चा कीजिए एवं चार्ट पेपर बनाइए।

गतिविधि-5

सूची बनाइए

संज्ञा	–	....	....	....
सर्वनाम	–	....	....	....
लिंग	–	....	....	....
वचन	–	....	....	....
गिनती	–	....	....	....
विलोम	–	....	....	....

अध्यापन-संकेत–किसी पत्रिका की कतरनों में से शब्दों को काटकर चार्ट पर चिपकाने के लिए कहें। खाली जगह पर संबंधित शब्दों को लिखवाएँ।

11 आसमान में कितने तारे

चिंतन-मनन

प्रकृति कितनी अनोखी है, सुबह जिस आसमान में सूरज चमकता है, उसी आसमान में रात भर तारे टिमटिमाते हैं, तारे इतने की गिनती भी कम पड़ जाए। अब कविता पढ़िए और तारों की अनोखी दुनिया का आनंद उठाइए।

आसमान में कितने तारे
क्या तुमको दिखते हैं सारे
किस-किस का तुम नाम जानते
कौन है कितने पास तुम्हारे

आसमान में कितने तारे?
दिन में क्यों छिपते हैं तारे
रात में क्यों दिखते हैं तारे
क्यों होता है यह गोरखधंधा
जगमग क्यों करते हैं तारे
दिन में क्यों छिपते हैं तारे?

शब्दार्थ–**आसमान**–गगन (sky), **पास**–नज़दीक (near), **गोरखधंधा**–उलझन (puzzle)

हर तारे की बात पुरानी
कुछ की लेकिन सही निशानी
क्या देखा, क्या जाना तुमने
बोलो इनकी राम कहानी
हर तारे की बात पुरानी!

–अनवारे इस्लाम

शब्दार्थ– **जगमग**–चमक (brightness)

जीवन-सूत्र

- प्रकृति परमात्मा की कलाकृति है। *–दाँते*
- प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है परंतु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। *–हरिऔध*

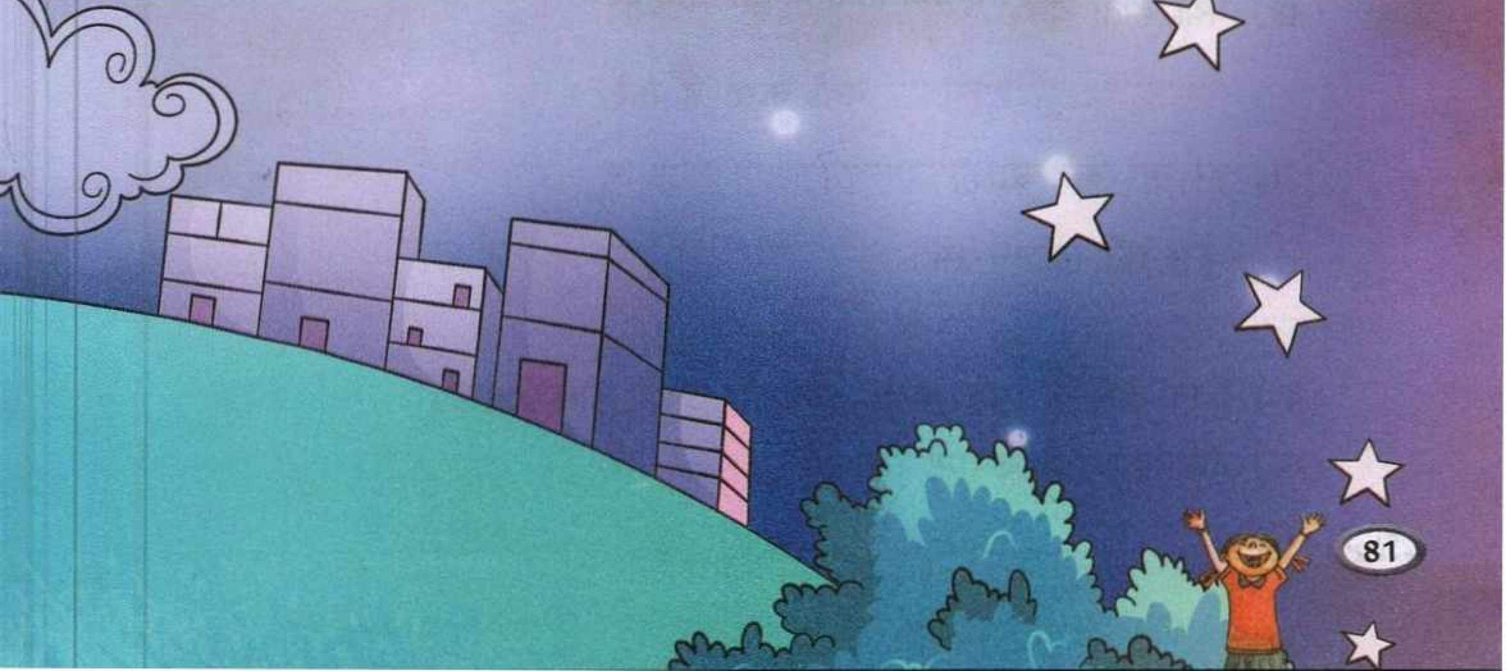

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

आसमान तारे तुम्हारे छिपते गोरखधंधा निशानी

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) आसमान में आपको क्या-क्या दिखाई देता है?

(ख) क्या आप बता सकते हैं कि आसमान में कितने तारे हैं?

(ग) तारे कब दिखाई देते हैं?

लिखित

1. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) आसमान में कितने ....,
क्या तुमको दिखते हैं ....?

(ख) क्यों होता यह ....
.... क्यों करते हैं तारे?

(ग) हर तारे की बात ....
कुछ की लेकिन सही ....।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जिन तारों के नाम आप जानते हैं, उनके नाम लिखिए।

(ख) तारों की राम कहानी लिखिए।

(ग) सूरज के जल्दी छिप जाने से क्या होता है?

(घ) तारों के टिमटिमाने के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) कवि इस कविता के माध्यम से आपसे क्या पूछना चाहते हैं?

(ख) यदि एक दिन सूरज न निकले तो क्या होगा? विचार करके बताइए।

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए–

कविता में कुछ प्रश्न पूछे हैं, जैसे–

(क) आसमान में कितने तारे?

(ख) दिन में क्यों छिपते हैं तारे?

(ग) क्या देखा क्या जाना तुमने?

इस तरह के वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं।

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

आसमान में कितने तारे
क्या तुमको दिखते हैं सारे।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में रेखांकित शब्द एक समान तुक वाले हैं।

कविता में प्रयुक्त समान तुक वाले शब्द लिखिए–

....

....

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

आसमान –	....	दिन –	....
तारे –	....	रात –	....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. आसमान में सबसे तेज़ चमकने वाले तारे का पता लगाइए, साथ ही सप्तर्षि नामक तारों के बारे में जानकारी एकत्र कर चित्र के माध्यम से प्रस्तुत कीजिए।
2. क्या आपने कभी तारों से बात की है या तारों से जुड़ी कोई दादी-नानी की कहानी सुनी है? याद कीजिए और बताइए।

क्रियाकलाप

1. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर "चाँद" पर कविता लिखिए और कक्षा में सस्वर सुनाइए–
   - चाँदी-सा
   - आकार बदलता
   - चाँदनी देता
   - सदा हँसता
   - हँसते रहना
   - सदा सिखाता कौन?
2. कक्षा को वर्ग में बाँटिए, हर वर्ग कुछ अनोखी चीज़ों की सूची बनाए। अब इन अनोखी चीज़ों के बारे में चर्चा कीजिए।

अध्यापन-संकेत–आकाश, तारों आदि पर चर्चा करके उन पर इसी प्रकार की छोटी-छोटी कविता लिखवाइए।

12 पिता का पत्र पुत्री के नाम

चिंतन-मनन

नेहरू जी ने जेल में रहकर अपनी पुत्री इंदिरा के नाम कई पत्र लिखे। पिता ने पुत्री को पत्र इतिहास व दुनिया की जानकारी देने के लिए लिखे। साथ ही वे अपनी पुत्री को निडर व साहसी बनाना चाहते थे। ये पत्र 'पिता का पत्र पुत्री के नाम' से प्रसिद्‌ध हैं। उन्हीं पत्रों में से एक पत्र यहाँ पर प्रस्तुत है।

नैनी जेल

26 अक्तूबर, 1930

प्रिय इंदिरा,

तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें कई **उपहार** मिले होंगे। मैं जेल में बैठा सिवाय **शुभ**कामनाओं के और कुछ नहीं दे सकता। मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी। 'जॉन ऑफ़ आर्क' की कहानी तुम्हें अच्छी लगती थी और तुम भी उसी की तरह बनना चाहती थीं पर तुम्हें पता है कि साधारण पुरुष तथा स्त्रियाँ साहसी नहीं होते। वे अपनी पारिवारिक समस्याओं तथा चिंताओं में उलझे रहते हैं। लेकिन एक समय ऐसा आ जाता है कि किसी महान उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए लोग उत्साहित होकर कार्य करते हैं और **वीर** और महान बन जाते हैं।

शब्दार्थ–उपहार–भेंट (gift), **शुभ**–मंगल (lucky), **वीर**–शूर, साहसी (brave)

बापू जी ने जो आंदोलन छेड़ा है, उसके हम साक्षी हैं और भारत के इतिहास निर्माण में हम भी सहयोग दे रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम बहादुर बनो। ऐसा काम करो जिसकी सारा समाज सराहना करे। कोई भी कार्य निरपेक्ष भाव से करो। मीदास राजा की कहानी याद रखो जिसने लालच में आकर अपनी पुत्री को सोने में बदला हुआ पाया था। बापू जी जो स्वतंत्रता आंदोलन चला रहे हैं, वह आंदोलन सिर्फ़ बापू के लिए नहीं अपितु सभी भारतीयों के लिए है। इसमें सक्रिय होकर भाग लो। मेरी शुभकामनाएँ हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

भारत की सेवा के लिए तुम सदा सिपाही की तरह तैयार रहो, यही मेरी शुभकामना है।

तुम्हारा पिता

जवाहरलाल।

शब्दार्थ–आंदोलन–किसी निश्चित उद्देश्य को पूरा करवाने के लिए की जाने वाली सामूहिक गतिविधि (movement), **सहयोग**–साथ देना (support), **निरपेक्ष**–अपेक्षा न रखने वाला (absolute dispassionate), **सक्रिय**–क्रियात्मक रूप में (active)

जीवन-सूत्र

- वह व्यक्ति जो अधिकतर अपने गुणों का बखान करता है, प्रायः बहुत ही कम गुणवान होता है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

साहसी	शुभकामनाएँ	इतिहास	निरपेक्ष	पारिवारिक
स्वतंत्रता	आंदोलन	सिपाही	उत्साहित	तैयार

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) नेहरू जी ने किसे और कहाँ से पत्र लिखा?

(ख) पुत्री के जन्मदिन पर पिता उपहार क्यों नहीं भेज सके?

(ग) साधारण लोग क्या करते हैं?

लिखित

1. सही के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) इंदिरा कायर बनना चाहती थीं।

(ख) 'जॉन ऑफ़ आर्क' की कहानी इंदिरा को अच्छी लगती थी।

(ग) ऐसा कार्य करो जिसकी समाज सराहना करे।

(घ) बापू जी स्वतंत्रता आंदोलन नहीं चला रहे थे।

2. रिक्त स्थान पूरा कीजिए–

(क) पिता .... पुत्री .... पत्र लिखा।

(ख) .... पर तुम्हें उपहार मिले होंगे।

(ग) राजा .... की कहानी याद रखो।

(घ) भारत की सेवा के लिए तुम सदा .... बनो।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) साधारण आदमी साहसी नहीं होते। वे वीर और महान कब बन जाते हैं?

(ख) बापू जी ने कौन-सा आंदोलन छेड़ा था?

(ग) मीदास राजा की कहानी में क्या हुआ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

- "भारत की सेवा के लिए तुम सदा सिपाही की तरह तैयार रहो" जवाहर लाल नेहरू ने ऐसा क्यों कहा? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

वीर – .... स्वतंत्रता – ....

सहयोग – .... स्त्री – ....

सक्रिय – .... साधारण – ....

2. संकेतों की सहायता से लिंग बदलकर शब्द-सीढ़ी बनाइए–

बाएँ से दाएँ

1. देवी का पुल्लिंग
2. सास का पुल्लिंग

ऊपर से नीचे

1. देवरानी का पुल्लिंग
2. सम्राट का स्त्रीलिंग
3. सुत का स्त्रीलिंग

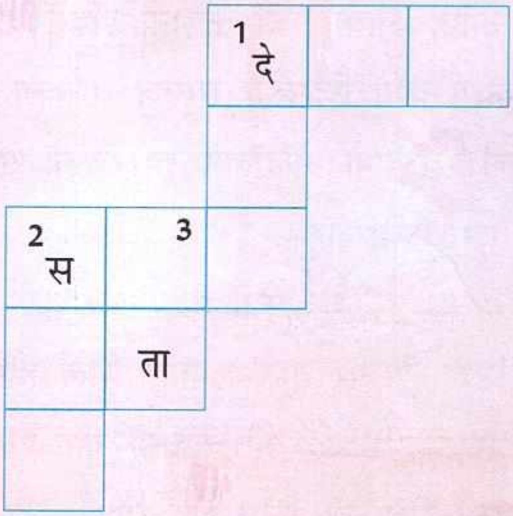

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- इंदिरा गांधी के कौन-से गुण आपको अच्छे लगते हैं? उन गुणों को अपनाकर आप क्या बनना चाहेंगे?

क्रियाकलाप

1. देश के स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए–
पत्र लेखन के लिए अनिवार्य बिंदु–

पत्र प्रकार	संबोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
बड़ों को पत्र	माननीय, मान्यवर पूजनीय, आदरणीय	चरण स्पर्श, नमस्कार सादर प्रणाम	आज्ञाकारी, कृपाकांक्षी स्नेहभाजन
मित्र को पत्र	मित्रवर, प्रिय, प्रियमित्र	सप्रेम नमस्कार, नमस्ते, नमस्कार	तुम्हारा मित्र, तुम्हारा शुभचिंतक
छोटों को पत्र	प्रिय, चिरंजीव	चिरंजीव रहो, सुखी रहो, शुभ आशीर्वाद, शुभाशीष	शुभाकांक्षी, शुभचिंतक, हितैषी
अपरिचितों को पत्र	महोदय, महोदया	नमस्ते, नमस्कार	भवदीय, भवदीया

2. नेहरू जी देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। प्रधानमंत्री का पदभार सँभालने के पश्चात् उनके द्वारा देश के लिए किए गए कार्यों की सूची बनाइए।
3. पता लगाइए कि जवाहरलाल नेहरू को चाचा नेहरू क्यों कहा जाता है?

अनमोल तसवीरें

नेहरू परिवार

'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान गांधी जी के साथ नेहरू जी

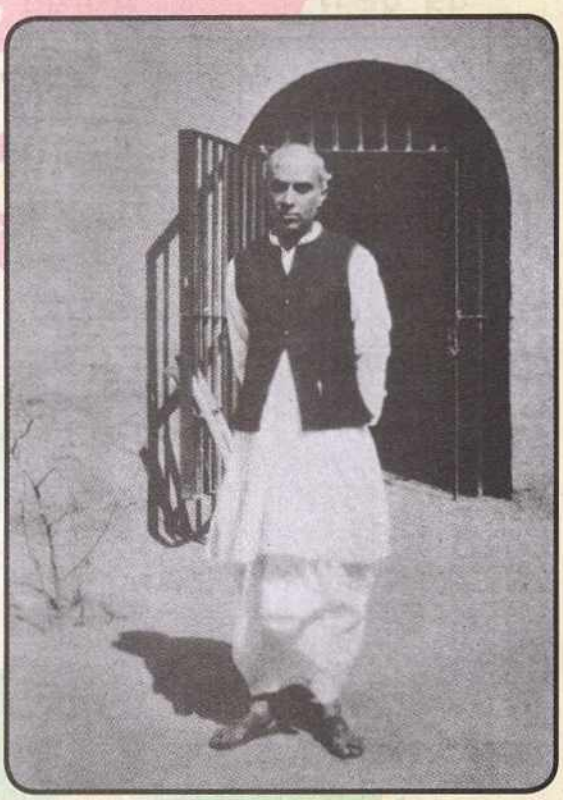

नैनी जेल में नेहरू जी

अध्यापन-संकेत—इस प्रकार के अन्य चित्रों का संग्रह करवाकर चार्ट बनवाइए।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता

डॉ० निर्मल वर्मा

आधुनिक हिंदी कहानी के अग्रणी लेखकों में डॉ० निर्मल वर्मा प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म 3 अप्रैल, 1929 को हुआ। निर्मल वर्मा के पिता का नाम श्री नंदकुमार वर्मा था। निर्मल वर्मा आठ भाई-बहनों में से पाँचवें थे।

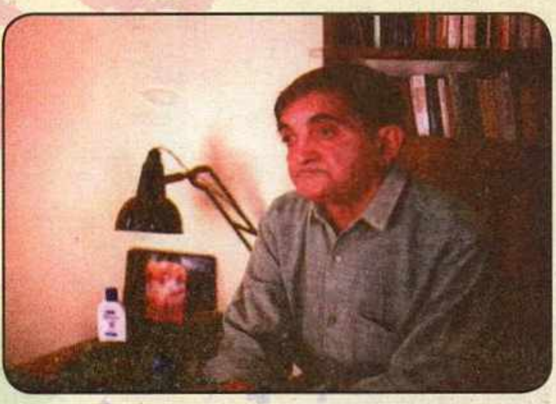

हिंदी कहानी में आधुनिक बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उनकी कहानियों में जीवन की यथार्थता को देखा जा सकता है। निर्मल वर्मा ने भारतीय और पश्चिमी संस्कृति पर व्यापक विचार किया है। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज में इतिहास विषय में एम०ए० कर, अध्यापन कार्य भी किया। समूचे यूरोप की यात्रा कर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का परिचय प्राप्त किया। लंदन में रहकर 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' के लिए कार्य किया। इनकी 'माया दर्पण' कहानी पर बनी फ़िल्म को सर्वश्रेष्ठ हिंदी फ़िल्म का पुरस्कार मिला। इन पर बी०बी०सी० ने डाक्यूमेंट्री फ़िल्म भी बनाई थी। इनका देहावसान 25 अक्तूबर, 2005 को दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ–रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, लाल टीन की छत (उपन्यास), सौ से अधिक कहानियाँ संग्रहों में प्रकाशित। परिंदे, कौवे और काला पानी, बीच बहस में, जलती झाड़ी आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

पुरस्कार–साहित्य का शीर्ष ज्ञानपीठ पुरस्कार। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से अलंकृत।

13 जीव-दया

चिंतन-मनन

समस्त प्राणी जगत में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, क्योंकि वह अपने भावों व विचारों को व्यक्त कर सकता है। मनुष्य को चाहिए कि वह पशु-पक्षियों के साथ क्रूर व्यवहार न करे। उन्हें भी दुख व पीड़ा की अनुभूति होती है। मनुष्यों को चाहिए कि वे पशु-पक्षियों एवं प्राणियों के साथ दया, करुणा तथा प्रेम का व्यवहार करें।

पाँच पांडवों में युधिष्ठिर सबसे बड़े थे। वे अपने दयालु स्वभाव और धर्म-निष्ठता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें प्राणियों से लगाव था। एक बार वे अपने भाइयों के साथ हिमालय पर्वत पर गए। सभी भाई अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े। युधिष्ठिर अपने साथ अपने कुत्ते को भी लेकर आए थे। उनके अच्छे कार्यों से प्रभावित होकर स्वर्ग से देवदूत आए और उन्हें स्वर्ग चलने के लिए प्रेरित करने लगे। युधिष्ठिर ने उस देवदूत से कहा कि वे अपने कुत्ते को भी अपने साथ ले जाएँगे क्योंकि वह उनका वफ़ादार साथी है, उसके बिना वे रह नहीं सकते।

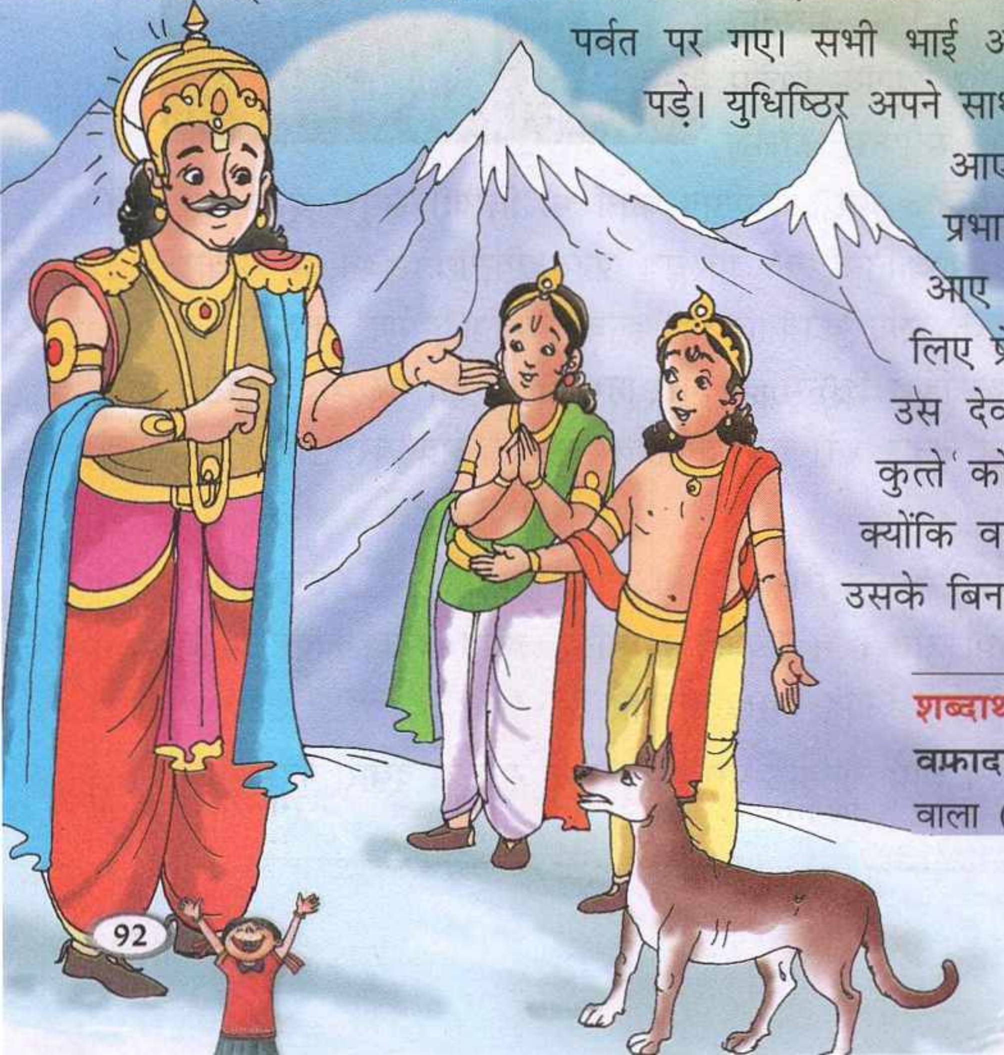

शब्दार्थ–कार्यों–काम (work), **वफ़ादार**– वचन पालन करने वाला (dutiful)

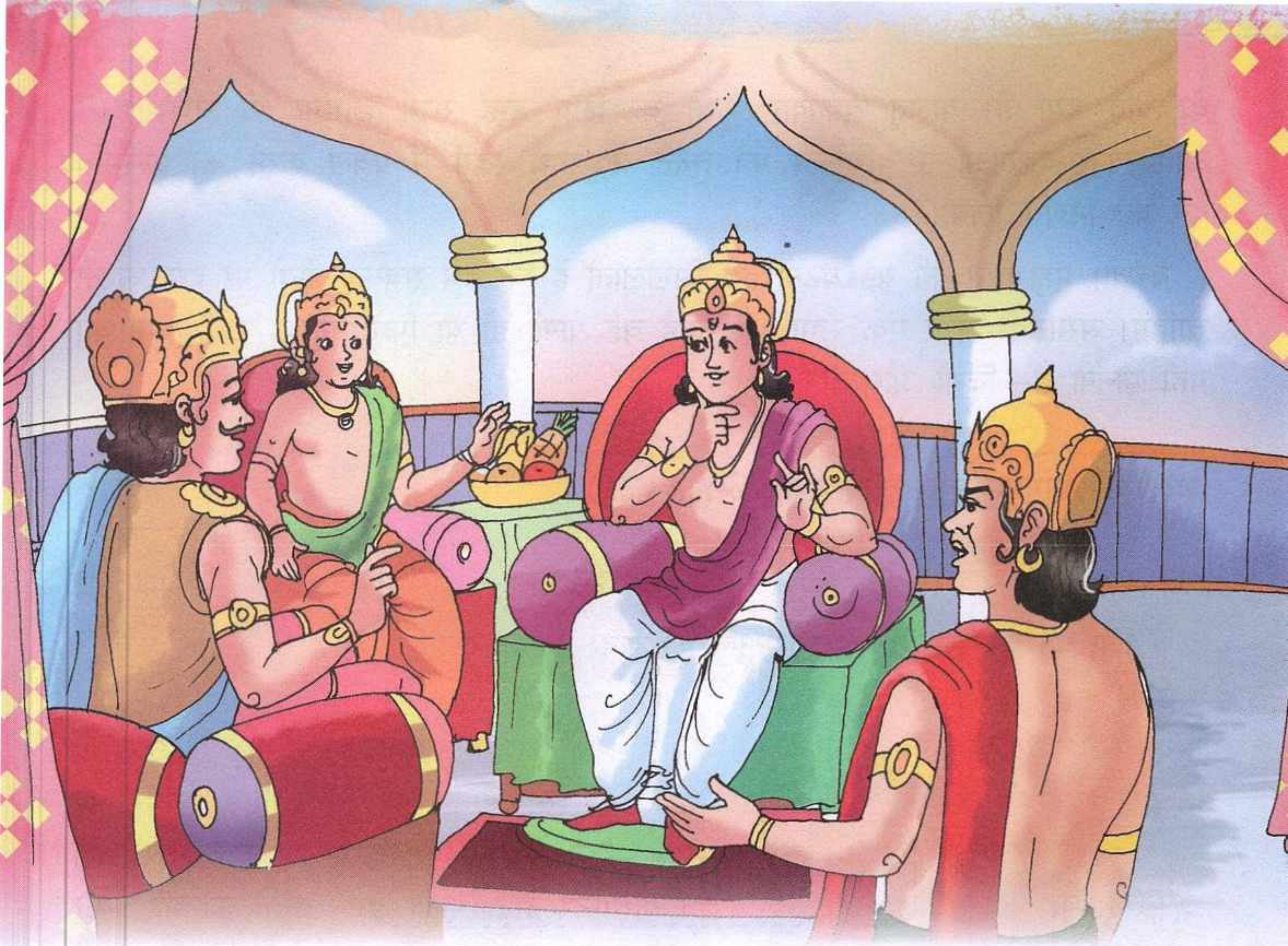

देवदूतों ने युधिष्ठिर को बहुत समझाया मगर वे अपनी बात पर डटे रहे। आखिर देवदूत हारकर स्वर्गलोक चले गए। युधिष्ठिर अपने वफ़ादार कुत्ते के साथ हिमालय का भ्रमण करते रहे। कुत्ता उनके सुख-दुख का साथी था।

देवदूतों ने जाकर देवताओं को सारी बात बताई। देवताओं के अनुसार, युधिष्ठिर ने अच्छे काम किए थे इसलिए उन्हें स्वर्ग में आने का अधिकार था मगर कुत्ते को स्वर्ग में कैसे आने दिया जा सकता था! स्वर्ग केवल मनुष्यों के लिए है, जानवरों के लिए नहीं।

देवताओं में इस घटना को लेकर चर्चा होने लगी। एक देवता ने कहा, "कुत्ते पर दया भाव दिखाकर तो युधिष्ठिर का बड़प्पन और भी बढ़ गया है। उनके मन में प्राणियों

शब्दार्थ–डटे रहे–अड़े रहने वाला (to be firm), **भ्रमण**–घूमना (to roam) **स्वर्ग**–देवताओं के रहने की जगह (heaven)

के प्रति दया है। पालतू वफ़ादार कुत्ते के लिए उन्हें स्वर्ग छोड़ना भी मंज़ूर है।'' आखिरकार देवताओं ने युधिष्ठिर को कुत्ते के साथ स्वर्ग में प्रवेश करने की **अनुमति** देने का निर्णय लिया।

बच्चो! महाभारत की यह घटना हमें सिखलाती है कि हम सबको जीवों पर दया करनी चाहिए। संसार में सभी एक समान हैं, चाहे वह प्राणी हो या फिर मनुष्य। सभी धर्मों का यही मानना है–'जियो और जीने दो'

शब्दार्थ–अनुमति–स्वीकृति, इज़ाजत (permission)

जीवन-सूत्र

- दया धर्म का मूल है। दयालुता मनुष्य को ईश्वर-तुल्य बनाती है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. श्रुतलेख एवं उच्चारण अभ्यास–

धर्म-निष्ठता	प्रेरित	स्वर्ग	हिमालय
भ्रमण	स्वर्गलोक	युधिष्ठिर	वफ़ादार

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) पांडवों में सबसे बड़े कौन थे?

(ख) युधिष्ठिर अपने साथ किसे और कहाँ ले गए थे?

(ग) सभी धर्मों का क्या मानना है?

लिखित

1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

(क) कौरवों में युधिष्ठिर सबसे बड़े थे। ☐

(ख) युधिष्ठिर अपने साथ गाय को ले गए। ☐

(ग) युधिष्ठिर भ्रमण करने हिमालय गए। ☐

(घ) यह पाठ जीव-दया का पाठ सिखाता है। ☐

(ङ) 'जियो और जीने दो' यह अधर्म है। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) युधिष्ठिर अपने पाँचों भाइयों के साथ कहाँ गए थे?

(ख) युधिष्ठिर के स्वभाव की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

(ग) देवता युधिष्ठिर को कहाँ ले जाना चाहते थे?

(घ) अंत में देवताओं ने क्या निर्णय लिया?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) युधिष्ठिर ने स्वर्ग जाने से मना क्यों कर दिया?

(ख) 'जियो और जीने दो' से आप क्या समझते हैं? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

भाषा ज्ञान

1. विलोम शब्द लिखिए–

अच्छा – ....बुरा.......... बड़ा – ....

स्वर्ग – .... हारना – ....

सुख – .... धर्म – ....

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द चुनकर लिखिए–

धर्मनिष्ठ	दयालु	नास्तिक	आस्तिक	सर्वज्ञ

(क) जो सभी पर दया दिखलाता है ....

(ख) धर्म के अनुसार चलने वाला ....

(ग) भगवान पर विश्वास रखने वाला ....

(घ) भगवान पर विश्वास न रखने वाला ....

(ङ) सब कुछ जानने वाला ....

3. पढ़िए और समझिए–

(क) स्वर्ग में चर्चा हो रही है। –(वर्तमान समय से संबंधित है।)

(ख) देवदूत हारकर स्वर्ग लोक चले गए। –(घटना हो चुकी है।)

(ग) स्वर्ग लोक में युधिष्ठिर और कुत्ता साथ जाएँगे। –(घटना आने वाले समय में होने वाली है।)

इस प्रकार से क्रिया के घटने या होने के समय का बोध कराने वाले शब्दों को काल कहते हैं।

1. चलता हुआ समय **(है) वर्तमान काल** कहलाता है।
2. बीता हुआ समय **(गया) भूत काल** कहलाता है।
3. आने वाला समय **(आएगा) भविष्यत् काल** कहलाता है।

रिक्त स्थान भरिए–

(क) वर्षा हो रही है। –यह .... काल का उदाहरण है।

(ख) कल छुट्टी थी। –यह .... काल का उदाहरण है।

(ग) मेरे मामा मुंबई से आएँगे। –यह .... काल का उदाहरण है।

(घ) बच्चा खाना खा रहा है। –यह .... काल का उदाहरण है।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. युधिष्ठिर की जगह अगर आप होते तो अपने पालतू जानवर को साथ ले जाने के लिए देवदूतों से क्या कहते?
2. क्या जानवरों में मनुष्यों से कम संवेदना या दर्द होता है? उनके प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?
3. 'दया धर्म का मूल है' पक्ष-विपक्ष में सोचिए और बताइए।

क्रियाकलाप

1. 'विश्व पशुकल्याण दिवस' कब मनाया जाता है? इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य क्या है? इस पर जानकारी एकत्र कर कोलाज बनाइए।
2. पालतू जानवरों की एक सूची बनाइए और पता लगाइए कि घर में इन जानवरों के साथ किस प्रकार की सावधानी बरतनी चाहिए? इनका ध्यान बेहतर तरीके से कैसे रखा जा सकता है?

गतिविधि-6

सूची बनाइए

अच्छा-बुरा, लड़की, मामा, पुस्तकें, बच्चे, घोड़े, बस्ता
काला-सफ़ेद, मामी, गधा, बालक, बालिका, लड़का

स्त्रीलिंग – ....

पुल्लिग – ....

एकवचन – ....

बहुवचन – ....

विलोम – ....

अध्यापन-संकेत–छात्रों से वचन, लिंग तथा विलोम शब्दों की सूची बनवाइए।

14 रेलगाड़ी की कहानी

चिंतन-मनन

आदिकाल में मनुष्यों के पास यातायात के साधन नहीं थे। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ आवागमन के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता हुई। 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।' यातायात के अनेक साधन अस्तित्व में आए। यातायात के नवीनतम साधनों ने मनुष्य की यात्रा को सुखद व रोमांचकारी बना दिया।

घूमना हम सभी को पसंद है। आप कहाँ-कहाँ घूमने जाते हैं? आप किस-किस साधन से **यात्रा** करते हैं? किस साधन से यात्रा करना आपको सबसे मज़ेदार लगा?

चलना मनुष्य का **स्वभाव** है। पानी भी चलता है, हवा भी चलती है, समय भी चलता है और मनुष्य भी चलता है। बहुत समय पहले लोग इधर से उधर जाने के लिए मीलों पैदल चलकर यात्रा करते थे। कई बार यात्रा इतनी लंबी होती थी कि सालों लग जाते थे। यात्री बीमार होकर मर भी जाते थे।

शब्दार्थ–यात्रा–सफ़र (journey), **स्वभाव**–आदत (habit)

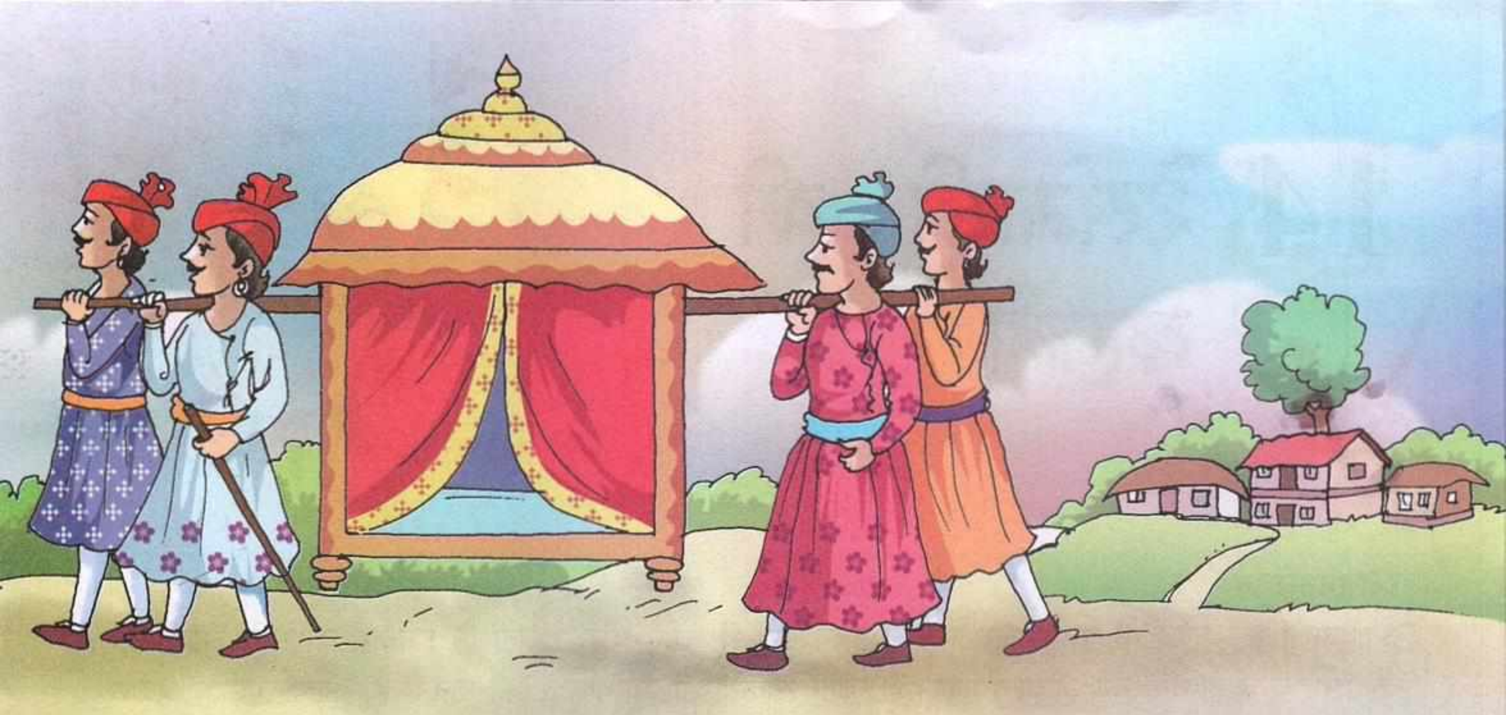

फिर आई पालकी। लंबी यात्रा के लिए पालकियाँ काम में लाई जाने लगीं। इन्हें चार लोग उठाते थे, मगर रास्ते में चलते-चलते थके लोगों की जगह लेने के लिए आठ या बारह लोग भी साथ चलते थे। पालकी का प्रयोग खासकर तब किया जाता था, जब साथ में स्त्रियाँ होती थीं।

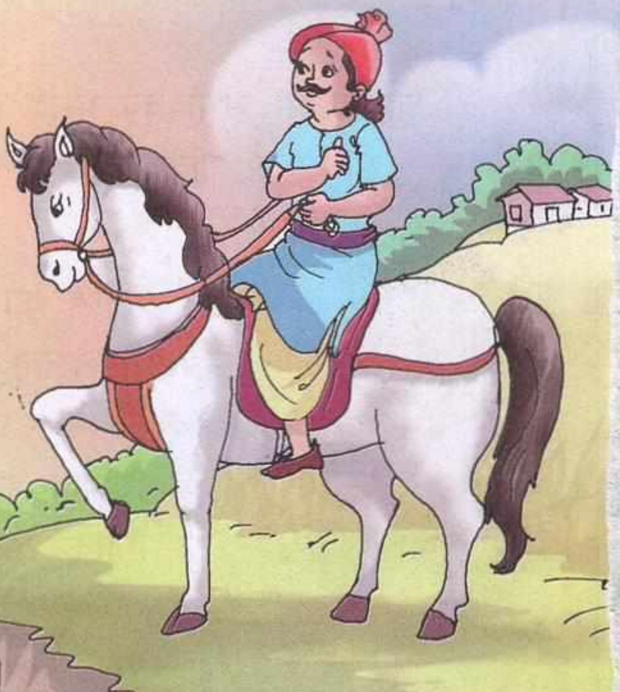

लंबी यात्रा थका देने वाली थी, अतः लोगों ने घोड़ों पर सवारी करने की सोची। इसमें समय भी कम लगता था और थकावट भी कम होती थी। बड़े-बड़े राजा-महाराजा हाथी-घोड़ों पर सवारी करते थे। आम आदमी को ये महँगे पड़ते थे, अतः छोटे-मोटे व्यापारी अपना माल गधे पर लादने लगे।

एक बार एक तुर्की व्यापारी ने ताना कस दिया कि 'मूर्ख लोग ही नदियों

शब्दार्थ–व्यापारी–व्यापार करने वाला (trader)

को पार करने के लिए उनके सूखने का इंतज़ार करते हैं।' इसी बात की चुभन से पहले लकड़ी के लट्ठों को नदी में बहाकर उसकी सहायता से नदी को पार करना शुरू किया गया और बाद में नाव द्वारा यात्रा करने का चलन आरंभ हुआ।

पहिये के आविष्कार से सर्वप्रथम बैलगाड़ी द्वारा यात्रा सुगम व सस्ती लगने लगी। धीरे-धीरे इसी पहिए से मशीन से चलने वाली गाड़ियाँ सड़कों पर दौड़ने लगीं।

लकड़ी की गाड़ी, गाड़ी पे घोड़ा।

और सोचो फिर आदमी का दिमाग इतना दौड़ा कि एक दिन देखा गया कि एक घोड़ा सरपट भाग रहा था और उसके पीछे लंबी रेलगाड़ी जुड़ी थी। पहली रेलगाड़ी कुछ ऐसी थी कि उसे 'वैगन' कहा जाता था। लकड़ी की पटरी और उस पर चलने वाले डिब्बे और डिब्बों को खींचते घोड़े—टप-टपा-टप-टप।

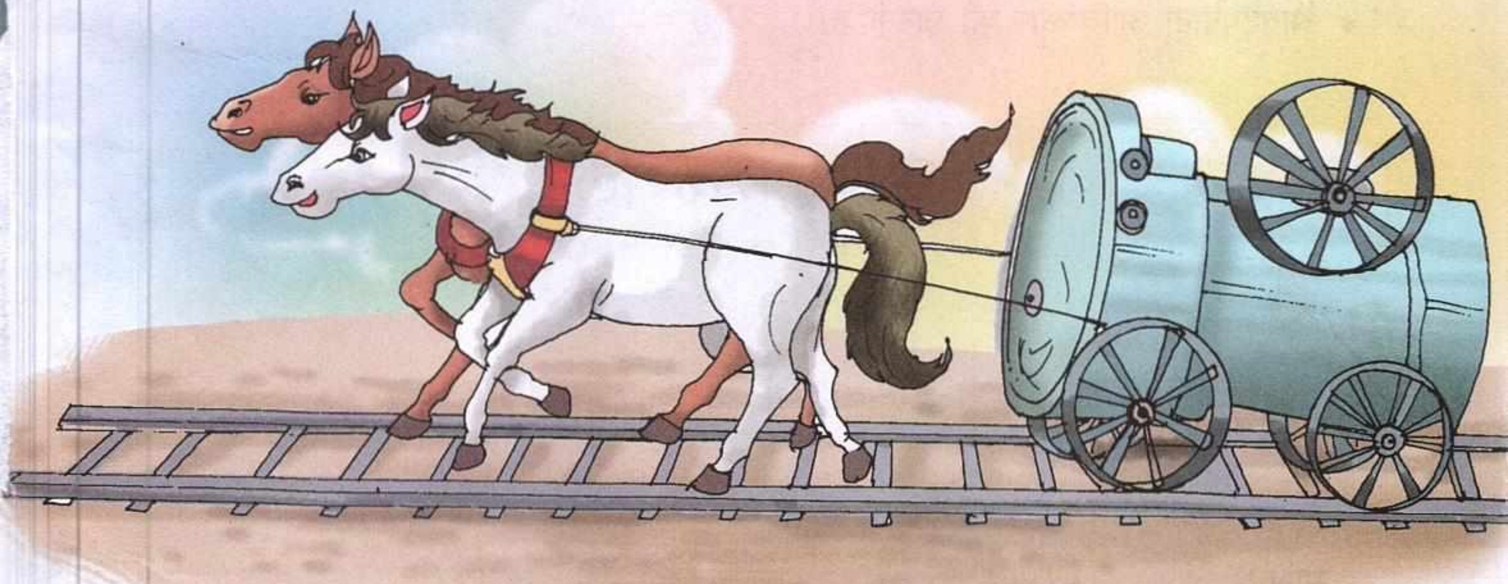

शब्दार्थ—आविष्कार—खोज (invention), **सर्वप्रथम**—सबसे पहले (first)

लकड़ी की पटरियाँ जल्दी ही टूटने लगीं, इसलिए लोहे की पटरियाँ बनाई गईं। इसे 'रैक रेलगाड़ी' कहा गया। जब पहली बार भाप के इंजन का निर्माण हुआ, तो उसे नाम दिया 'कैच मी हू केन' (जो भी मुझे पकड़ सके) और फिर तो लोकोमोशन, बुलेट ट्रेन, मेट्रो, ऐरोड्रेन्स (हवाई रेलगाड़ी), मोनो रेल (ऊपरी पटरी से लटककर चलने वाली ट्रेन) आदि कई नाम जुड़ते चले गए।

जीवन-सूत्र

- प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके विचार ही सारे तालों की चाबी है।
- आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

1. शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा श्रुतलेख–

साधन	स्वभाव	मनुष्य	पालकी
आविष्कार	तुर्की	डिब्बे	लोकोमोशन

2. कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) पहले लोग यात्रा कैसे करते थे और उन्हें कितना समय लगता था?

(ख) पालकी का प्रयोग किसलिए किया जाता था?

(ग) पहली रेलगाड़ी का नाम बताइए।

लिखित

1. उचित शब्द से रिक्त स्थान भरिए–

(क) चलना मनुष्य का .... है।

(ख) लोग .... पैदल चलकर यात्रा करते थे।

(ग) कई बार यात्रा इतनी लंबी होती थी कि .... लग जाते थे।

(घ) बड़े-बड़े राजा-महाराजा .... पर सवारी करते थे।

(ङ) घूमना हम .... को पसंद है।

2. पाठ के अनुसार पहले क्या हुआ? क्रम संख्या लिखिए–

(क) भाप के इंजन का निर्माण हुआ। ☐

(ख) नाव द्वारा यात्रा करना प्रारंभ हुआ। ☐

(ग) लोग मीलों चलकर यात्रा करते थे। ☐

(घ) लोगों ने घोड़े पर सवारी करने की सोची। ☐

(ङ) लोग पालकी में सवारी करते थे। ☐

(च) अब मोनो रेल का प्रचलन हो गया है। ☐

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लंबी यात्रा के लिए किस साधन का प्रयोग किया जाता था? इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाता था?

(ख) तुर्की व्यापारी द्वारा कहे गए शब्दों का क्या प्रभाव हुआ?

(ग) लकड़ी की पटरी टूट जाने पर किस चीज़ की पटरी बनाई गई?

(घ) विभिन्न प्रकार की रेलों के नाम लिखिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) यातायात के मुख्य साधन कौन-कौन-से हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(ख) प्राचीनकाल में यात्राएँ थका देने वाली क्यों होती थीं?

भाषा ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए–

आप कहाँ-कहाँ घूमने जाते हैं?

आप किस-किस साधन से यात्रा करते हैं?

किस साधन से यात्रा करना आपको सबसे मज़ेदार लगा?

उपर्युक्त वाक्य पाठ से लिए गए हैं और इनमें हमसे कुछ पूछा जा रहा है। इस तरह के वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं।

अब पाठ से कोई तीन प्रश्न बनाइए और लिखिए–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

2. पाठ में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द पहचानकर लिखिए–

....

3. रेखांकित शब्दों का विलोम लिखिए–

(क) लंबी यात्रा थका देने वाली थी। ....

(ख) व्यापारी अपना माल गधे पर लादते थे। ....

(ग) इसमें समय भी कम लगता था। ....

(घ) मूर्ख लोग ही नदियों को पार करने के लिए उनके सूखने का इंतज़ार करते हैं। ....

4. मुहावरों के नीचे रेखा खींचिए।

(क) ज़रूरत के समय मोहन के मित्र ने अँगूठा दिखा दिया।

(ख) बच्चे को देखकर माँ फूली न समाई।

(ग) पुलिस को आते देख चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

(घ) अध्यापिका के न आने पर छात्रों ने वर्ग में आसमान सिर पर उठा लिया।

(ङ) देश की रक्षा के लिए सैनिक कमर कसकर तैयार रहते हैं।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. 'विज्ञान ने बहुत कुछ हासिल किया है।' क्या आप इस विचार से सहमत हैं? लिखिए।
2. यात्रा करने का कौन-सा साधन आपको पसंद है और क्यों?

क्रियाकलाप

- प्राचीन काल में 'कबूतर' संदेश लाने-ले जाने का काम करते थे। आज हम संदेश प्राप्त करने और भेजने के लिए मैसेज या ईमेल का प्रयोग करते हैं। आप प्राचीन काल से अब तक प्रयोग में लाए गए संदेश भेजने के साधनों की सूची बनाइए और चित्र चिपकाकर उनके बारे में बताइए–

अतिरिक्त पठन

मेरी नानी

मेरी नानी, प्यारी नानी।
सबसे न्यारी, मेरी नानी।
रोज़ शाम को हमें सुनातीं,
राम, कृष्ण, हनुमान की कहानी।।

सुनकर लव-कुश की कहानी,
आँखों में भर आता है पानी।
चाँद-तारों को दिखलाकर वह,
सुनातीं श्रवण, ध्रुव कुमार की कहानी।।

महान कथाएँ सुन-सुन,
श्रवण, ध्रुव जैसा बन जाऊँगा।
गुरु-बड़ों का आदर कर,
आँख का तारा बन जाऊँगा।

महान कहानियाँ सुन-सुन,
बड़ा मैं बन जाऊँगा।
सच्चा सपूत बन,
देश का लाल कहलाऊँगा।।

–जयश्री अय्यंगार

बूझो तो जानें

अचकन पर गुलाब का,
लाल फूल मुसकाता रहता।
श्वेत कबूतर शांति का संदेश देता,
विश्व शांति का पैगाम देने वाला
कौन है?

....।

दे दी हमें आज़ादी,
बिना खड्ग, बिना ढाल,
साबरमती के संत तूने
कर दिया कमाल।

....।

'निर्मल हृदय' की निर्मला,
कोलकाता के बेसहारों, असहायों को,
सहारा देने वाली निर्मल हृदयी,
ममतामयी कौन?

....।

अध्यापन-संकेत—पहेलियों के माध्यम से वर्ग में महान व्यक्तियों का परिचय करवाएँ।

ये भी जानिए

भारत के प्रधानमंत्री

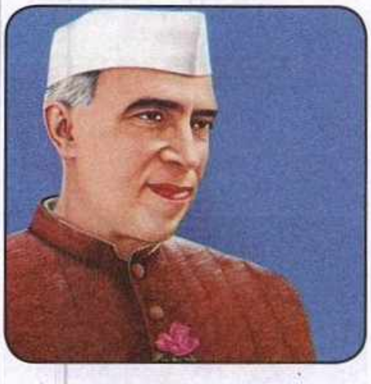

1947–1964

पं० जवाहरलाल नेहरू

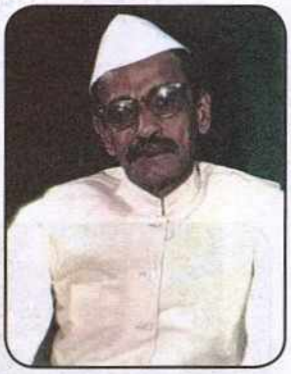

1964–1966

गुलजारी लाल नंदा

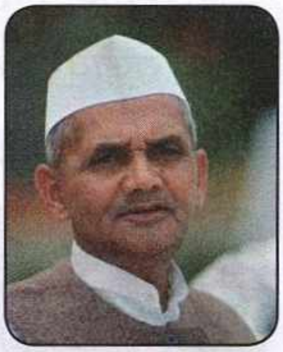

1964–1966

लाल बहादुर शास्त्री

नोटः गुलजारी लाल नंदा 27 मई, 1964 से 09 जून, 1964 तक एवं 11 जनवरी, 1966 से 24 जनवरी, 1966 तक कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने।

1966–1977, 1980–1984

इंदिरा गांधी

1977–1979

मोरारजी देसाई

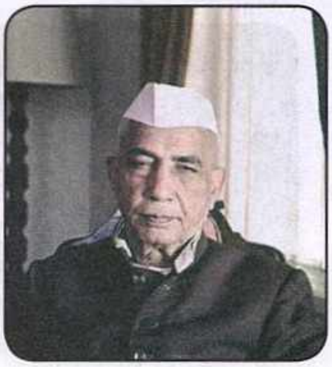

1979–1980

चौधरी चरण सिंह

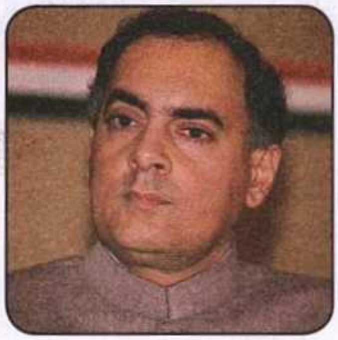

1984-1989

राजीव गांधी

1989-1990

विश्वनाथ प्रताप सिंह

1990-1991

चंद्रशेखर सिंह

1991-1996

पी०वी० नरसिम्हाराव

1996-1997

एच०डी० देवगौड़ा

1997-1998

इंद्र कुमार गुजराल

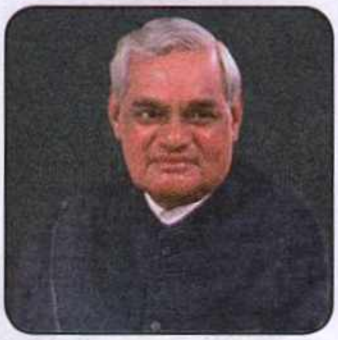

1998-2004

अटल बिहारी वाजपेयी

2004-2014

डॉ० मनमोहन सिंह

2014-अब तक

नरेंद्र दामोदरदास मोदी

परियोजना पन्ना 1

पत्र-लेखन

कुशल क्षेम बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए–

.... (भेजने वाले का पता)

....

.... (संबोधन)

.... (अभिवादन)

(कुशल-मंगल) ....

....

(विषय-विस्तार) ....

....

....

....

....। (समापन)

.... (संबंध)

.... (हस्ताक्षर)

अध्यापन-संकेत–कक्षा में 'अनौपचारिक-पत्र' की चर्चा कर छात्रों में 'पत्र-लेखन' की कला को विकसित करें।

2 परियोजना पन्ना

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

भारत किसानों का देश है। भारतीय संस्कृति में किसान को भगवान विष्णु का अवतार माना गया है। किसान कड़ी धूप में, कड़कती सरदी में और मूसलाधार बारिश में भी काम करता है। अगर किसान अनाज नहीं उगाएँगे तो हम सब भूखे रह जाएँगे। किसान का काम श्रेष्ठ काम है। किसान को 'अन्नदाता' भी कहा जाता है। किसान के काम का हमें आदर करना चाहिए। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अध्यापक बनने की आस हर छात्र की होती है। किसान बनने की भी इच्छा रखनी चाहिए। लाल बहादुर शास्त्री जी का नारा 'जय जवान-जय किसान' हमें याद रखना चाहिए।

(क) भारत किसका देश है?

....

(ख) किसान किसका अवतार माना जाता है?

....

(ग) किसान क्या-क्या काम करता है?

....

(घ) छात्रों को क्या बनने की आस होती है?

....

(ङ) लाल बहादुर शास्त्री जी का नारा क्या था?

....

परियोजना पन्ना 3

अनुच्छेद-लेखन

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अध्यापन-संकेत—चित्र में दिखाई देने वाली सब्ज़ियों को पहचानने के लिए कहिए। हो सके तो इन्हें वर्ग में लाने के लिए कहिए। पोषक तत्वों की चर्चा कीजिए तथा मनपसंद सब्ज़ी के बारे में अनुच्छेद लिखने के लिए कहिए।

4 परियोजना पन्ना

संवाद-लेखन

चित्र को ध्यान से देखिए। कल्पना से दोनों के बीच होने वाले संवादों को लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

अध्यापन-संकेत–छात्रों को संवाद-लेखन का अभ्यास करवाएँ।

पर्व

अध्यापन-संकेत–चित्र में दिए गए पर्वों की चर्चा करें। ये पर्व किस-किस महीने में आते हैं, इसकी चर्चा करें व चित्र में दर्शाए गए त्योहारों के नाम लिखवाएँ।

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

- दूसरों द्‌वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।
- सुनी/पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं।
- विविध प्रकार की सामग्री (जैसे—समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं।
- पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं।
- अपनी पाठ्‌यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल साहित्य/समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं।
- पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे—गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं।
- भाषा की बारीकियों, जैसे—शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, लिंग, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।
- किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न स्थितियों और उद्‌देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्‌ठी आदि) के अनुसार लिखते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्‌वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्‌देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
- विभिन्न उद्‌देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे—पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।